अमृता प्रीतम की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

स्नेहा

सीताराम नाईक

अनुक्रमांक: 22P0140032

PR Number: 201900699

मार्गदर्शक

मनिषा गावडे

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक:

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "अमृता प्रीतम की कहानियों में चित्रित नारी जीवन" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms. Manisha Gaude and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one has needed .

Sneha Sitaram Naik

22P0140032

Date:

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "अमृता प्रीतम की कहानियों में चित्रित नारी जीवन" is a bonafide work carried out by Ms. **Sneha Sitaram Naik** under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Manisha Gawade

Professor Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

School Stamp

Date:

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	i
	अनुक्रम	iv
	प्रस्तावना	vii-x
1	अमृता प्रीतम का परिचय 1.1 जन्म 1.2 माता-पिता 1.3 वैवाहिक जीवन 1.4 कृतित्व	1-16
2	नारी जीवन 2.1 सामाजिक जीवन 2.2 शिक्षित जीवन	17-35

	2.3 राजनीतिक जीवन 2.4 आर्थिक जीवन 2.5 धार्मिक जीवन 2.6 संस्कृतिक जीवन 2.7 पारिवारिक जीवन	
3	अमृता प्रीतम की कहानियों में चित्रित नारी जीवन 3.1 बाल विवाह 3.2 स्त्री का शारीरिक शोषण 3.3 अंधविश्वास एवं रेडियो में घिरी 3.4 स्त्री शिक्षा 3.5 अन्याय साहित्य स्त्री 3.6 स्त्री एवं आर्थिक संघर्ष 3.7 दहेज प्रथा	36-66
4	भाषा एवं शैली 4.1 भाषा 4.2 शैली	67-79
5	उपसंहार	80-82

6	संदर्भ सूची	83-89

प्रस्तावना

भारत में ऐसे बहुत सारे विद्वान लेखक और लेखिका हैं जिन्होंने कई सारे विषयों पर अपनी रचना रची है। अपने कलम के माध्यम से उन्होंने समाज में हो रहे सभी समस्याओं को अपनी साहित्य के माध्यम से उल्लेख किया है। प्रेमचंद से आज तक बहुत सारे लेखक और लेखिकाओं ने अपना विषय समाज के सामने रखा हुआ है। अपनी कलम के जरिए लोगों को जागृत करने का प्रयत्न किया है। उनमें से एक है 20 सी सदी की 'अमृता प्रीतम'। जिन्होंने अपनी कलम से पूरे भारत में प्रसिद्ध की है। उन्होंने बहुत सारे विषयों को लेकर अपने साहित्य में रचा हुआ है। अमृता प्रीतम पंजाबी सर्वप्रथम लेखिका है। जिन्होंने स्त्री के ऊपर काम किया है। उन्होंने स्त्री को अपना धैर्य बनाकर उसको समाज के सामने चित्रित किया है। स्त्री को समाज के सामने कैसे पेश करना है यहां अमृता पिता अपने साहित्य में बताती है उनकी कहानी उपन्यास कविताएं ऐसी बहुत सही विदाई है जिन्होंने उनके ऊपर काम किया है। अमृता प्रीतम का नारी के लिए बहुत संघर्ष दिखाई देता है। उन्होंने नारी के पीड़ा को अनुभव किया है। नारी के स्थिति को समाज के सामने लाने का प्रयास और उनके के लिए लड़ना यह इसमें हमें दिखाई देता है।

प्रथम अध्याय: अमृता प्रीतम: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, इस अध्ययन के अंतर्गत 'अमृता प्रीतम' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें उनका जन्म, शिक्षा, माता-पिता, वैवाहिक जीवन, पुरस्कार, लेखन कार्य आदि की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय: नारी जीवन इस अध्ययन में नारी जीवन के सैद्धांतिक भाग पर काम किया है। जिसमें सामाजिक राजनीति के शैक्षणिक धार्मिक सांस्कृतिक इन सब में नारी का जीवन कैसे दिखाया गया है इस पर चर्चा की गई है यहां एक सैद्धांतिक पाठ है।

तृतीय अध्याय: अमृता प्रीतम के कहानियों में चित्रित नारी जीवन में अमृता प्रीतम जी की कहानियों में नई समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है। अमृता प्रीतम की कहानियों में नारीयों की अलग-अलग समस्या है उसके ऊपर चर्चा की गई है। अस्मिता की तलाश करती नारी, स्वतंत्रता के बाद कि नारी, रीति रिवाज परंपराएं, बाल विवाह, स्त्री का शारीरिक शोषण, अंधविश्वास एवं रुढियों में गिरी स्त्री, अन्य सहती स्त्री, स्त्री एवं आर्थिक संघर्ष आदि का उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय: भाषा शैली किसी भी रचना की भाषिक संरचना उसको स्तर प्रदान करती है। भाषा एवं शिल्प की कसौटी पर रचना का मूल्यांकन किया जाता है। जिस तरह विषय महत्वपूर्ण होता है इस तरह बादशाह भी महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत चतुर्थ अध्याय में भाषा शैली पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय: उपसंहार पंचम अध्याय इस शोध प्रबंधक का अंतिम अध्याय होता है। जिसमें संपूर्ण कार्य का संक्षिप्त में वर्णन किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध की रचना में अने प्रेरणाएं रही है। इस अवसर पर सबका स्मरण करती हूं। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में मेरी निर्देशक मनिषा गावडे का आभार मानती हूं। जिन्होंने मुझे मेरे शोध प्रबंध में मार्गदर्शन किया। उनके लिए मैं हृदय से उनके आभारी हूं।

मैं हिंदी विभाग के सभी अध्यापकों को आभार मानती हूं। जिन्होंने हर समय हमारा साथ दिया हमारे साथ खड़े रहे।

मैं गोवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की आभारी हूं। जिन्होंने मुझे पुस्तकों के लिए सहायता की है।

मैं उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की है।

प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध को पूर्ण करते समय जहां तक मेरे विचार एवं अध्ययन क्षमता है वहां तक इस विषय को न्याय देने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय

अमृता प्रीतम का जीवन परिचय

1.1 जन्म

अमृता प्रीतम का जन्म ३१ अगस्त १९१९ में गुजरांवाला, पंजाब में हुआ। अमृता प्रीतम पंजाबी के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक थीं। पंजाब (भारत) के गुजराती जिले में जन्मीं अमृता प्रीतम को पंजाबी भाषा की पहली कवयित्री माना जाता है। करतार सिंह हितकारी की वह इकलैती संतान थी। उनका लेख और उनकी कविताएँ बहुत सी भारतीय और विदेशी भाषाओं में लिखी गई हैं। उन्हें अपनी पंजाबी कविता 'अज्ज आखाँ वारिस शाह नूं' के लिए बहुत प्रसिद्ध प्राप्त हुई। अमृता प्रीतम जी अपने रचनाओं में महिलाओं की पीड़ा एवं वैवाहिक जीवन के कटु सत्य को बताती है। अमृता प्रीतम 60 साल से भी ज्यादा पंजाबी साहित्य में राज्य करने वाली महान कवियित्री उनकी लोकप्रियता भारत में ही नहीं पूरे पाकिस्तान में भी है। शुरूआती द्वार में वह रोमांटिक कविताएं लिखती थी लेकिन बाद में वह प्रगतिशील लेखन आंदोलन का हिस्सा बनीं। अमृता अपनी एक अंतरयात्रा में कहती है कि “जब पैदा हुई थी तब घर की दीवारों पर मौत के साए उतरे हुए थे।”[1] वह तीन बरस की थी तब उसका भाई घुटनों के बल चलता हुआ नहीं रहा। वह जब पूरे गैरह वर्ष की भी नहीं थी तब मां ने अपने प्राण छोड़ दिए। “मैं बहुत छोटी थी जब मां नहीं रही तो रात को जब मैं छत पर सोती लगता चांद पर मेरी मां का नाम लिखा हुआ है।”[2]

पंजाबी कविता एवं साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान देने वाली अमृता प्रीतम है। जिस विषय पर उनकी लखनी चलती है उसे विषय पर उनकी गहराई और गंभीरता नजर आती है। उन्होंने सामाजिक मान्यताओं पर किसी यथार्थ से लिखा है। उसे तोड़ने का भी साहस किया है। "तू ईश्वर का नाम ले कौन जाने उसके मन में दया आ जाए बच्चों का कहा वह नहीं टालता मेरी मां की सहेली मेरी मौसी ने मुझे कहा।"[3] अमृता को किसी ने कहा था की भगवान पर विश्वास रखो भगवान से प्रार्थना करो वह सब ठीक करेगा अमृता ने भगवान से बहुत प्रार्थना की जब उसकी मां बहुत बीमार थी। लेकिन भगवान ने उनकी एक भी नहीं सुनी तब से अमृता जी का विश्वास भगवान पर से हट गया। जब छोटी थी तभी उसके पिता ने उसके हाथ में कलम थमी थी। वह छत पर जाकर आसमान मे देखकर अपनी मां को कविता लिखती। उन्होंने पहली कविता लिखी थीं जो 'वारिश शाह नू' की थी। उस रचना में पंजाब की हजारों स्त्रियों की वेदना भी शामिल है। घर मे कोई भी न रहने के कारण वह अकेली पड़ जाती थी। भारत विभाजन की का संधि का दर्द भक्ति लोगों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। भारतीय नारी बदलते हुए छवि उसकी सोच को सचिव अभिव्यक्ति दी है। उनके रचनाओं में सारा मानव समाज को उसका दर्द दिखाया गया है। पंजाबी परिवेश को दर्शाती उनकी रचनाओं का स्वर्ग बाहर की संस्कृति को वशिष्ठ स्वर है। पूरी रात पिता जागते और लिखते थे और सुबह सारा दिन सो जाते थे। अमृता अपनी नानी के पास रहती थी। एक दिन अमृता ने देखा की नानी जो है वह मुसलमान

और हिंदू को अलग-अलग करके बर्तन रखे हुए थे। “सबसे पहले विद्रोह मैंने उसके राज्य में किया था।”[4] तब उन्होंने विरोध किया। और कहने लगी कि जो मुसलमानों के लिए बर्तन रखे गए है। उसी में मैं भी खाया पिया करुगी और नानी तो उसे भुखा नहीं रह सकती थी। यह बात पिता को पता चली तब उन्होंने भी कहा कि यह नहीं चलेगा ऐसे नियम हमारे यहां नहीं चलते। तब अमृता को बहुत अच्छा लगा की अब यह अलग-अलग से नहीं रखे जायेंगे। पिताजी के जब मुस्लिम दोस्त आते थे। तो उनके लिए बर्तन अलग रखे हुए थे और हिंदुओं के लिए रखे थे। अमृता के चारो ओर सिर्फ पुस्तके ही पुस्तके थी। तो वह भी उसी मे शामिल हो गई और वह भी एक किताब बन गई। १९४७ के भारत पाकिस्तान विभाजन के समय अमृता जी लाहौर से देहरादून गई थी। “उन्हीं दिनों मैंने एक उपन्यास लिखा था ‘पिजंर’ जिसकी कहानी बंटवारे से पहले शुरू होती है।”[5] उन्होंने ‘आजा अक्खा वारिश शाह नू’ कविता की लिखी। यह कविता उन्होंने विभाजन के दौरान जो परिस्थिती थी उसको देखकर यह कविता लिखी है। उस विभाजन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने बटवरे के समय विस्थापन का दर्द, दंगे, हत्यार और बलात्कार देखे थे। इसी कविताने अमृता को भारत पाकिस्तान में लोकप्रिय बना दिया था। उन्होंने ८ वर्ष की आयु में अपनी पहली रचना लिखी थी। वह छत पर जाकर आसमान में देखकर अपनी मां को कविता लिखती। कुछ भी लिखने के बाद वह अपने पिता को एक बार जरूर दिखाती थी। ‘थडीया किरण’ अमृता जी कि पहली रचना। वह पहली पंजाबी में लिखती थी और

बाद में हिंदी में लिखना शुरू किया। अमृता को पिताजी के साए में कई साहित्यकारों से मिलने के अवसर प्राप्त हुए। जैसे की रविन्द्र नाथ टैगोर। जब वह मिले तब उन्होंने अमृता को एक नज्म सुनने को कहा तो अमृता ने थी। सुनने के बाद जो प्यार दिया उसे अमृता महसूस करती रहीं। बटवारे के समय अमृता ने वारिश शाह पर कविता लिखी थीं। अमृता जी की मुलाकात इमरोज़ से तब हुई जब अमृता जी दिल्ली में रहती थी। तब वह इंडिया रेडियो दिल्ली मे काम करती थी। साहिर के जाने के बाद अमृता पूरी तरह टूटकर बीकर गई। इस दौरान अमृता को अपनी किताब के कवर के लिए डिजाइन करवाना था,इसके लिए उन्हें एक कलाकार की जरूरत थी। इसी दौरान उनको इमरोज़ से मुलाकात हुई। वह इमरोज को एक सच्चा और अपना अच्छा दोस्त मानती हैं। अमृता प्रीतम जिन्हें २० वीं सदी की पंजाबी कवियत्री और लेखिका जो प्रसिद्ध केवल भारत में नहीं बल्कि विदेशों में भी है,कहा उनकी कई भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ है। अमृता प्रितम की कई विधाएं है जैसे की कविता,कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आत्मकथा आदि। उनके काव्य संग्रह के लिए सन १९५६ में 'सुनेहदे' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। अमृता प्रीतम ने लोगों की सोच अपने मन में नहीं रखने के कारण और अपनी ही जीवन में जो कुछ भी था उसे की लेकर अपने सारी जिंदगी बिताई इस कारण आज बहुत बड़ी प्रसिद्ध लेखिका बन गई है। उमा त्रिलोक अपनी किताब में लिखती है कि "मैं बचपन से ही अमृता जी के बारे में जानती थी।"[6] उमा त्रिलोक को अमृता के बारे में जानना

उनको पहचाना था। बचपन में ही बहुत अमृता के गाए हुए गीत उन्हें पसंद थे। अमृता जी की सारी पुस्तकें उन्होंने पड़ी थी और अब सिर्फ एक बार उमा त्रिलोक को अमृता से मिलने का मौका चाहिए था। और आखिर जाकर उन्होंने अमृता जी के लेखक दोस्त की मदद से उनके जन्म दिन पर मिलना चाहा। “अमृता जी घर की पहली मंजिल पर रहती थी।”[7] उमा त्रिलोक में अमृत जी का वर्णन करते हुए बताया है “कि स्नेह व आदरवश मैं अपनी आंखें उनके चेहरे से हटा ही नहीं पा रही थी मैंने देखा उसका सुकुमार चेहरा मुस्कुराया, उजली गोरी रतन छोटे-छोटे कटे बाल गाल पर तिल और नाजुक बदन नन्हें-नन्हें हाथ सुंदर कोमल उंगलियां।”[8] उमा त्रिलोक ने जब अमृता से जान पहचान की तब अमृता को वह एक दोस्त की हैसियत से पसंद थी। उमा त्रिलोक ने अमृत के साथ जाकर अनुभव किया। उन्होंने उनकी सेवा बहुत अच्छी तरह से की। उमा त्रिलोक ने अमृता का इलाज एक जान पहचान डॉक्टर से किया था। वह रोज अमृता से मिलने के लिए उसके घर जाती थी। अमृता जी ने एक दिन अपनी प्राण छोड़ दिए। और उनकी मृत्यु 31 अक्टूबर 2005 को हुई।

1.2 माता पिता

अमृता प्रीतम ने अपने आत्मकथा में लिखा है कि “मेरे मां बाप दोनों पंचांग हंसोड़ के स्कूल में पढ़ाते।”[9] बीस बरस की राज बीबी ने गुजरांवाला में साधुओं के एक डेरे में माथा टेका था, और उसकी नजर कुछ उतने ही बरस के एक नंद माम के साधु

पर जा पड़ी थी।"[10] साधु नंद साहिकारो का लड़का था। जब छह महीने का था तब मां लक्ष्मी मर गई थी। उसकी नानी ने उसे अपने गोद में डाल लिया था और अनाज फटकने वाली एक औरत के दूध पर पाल लिया था। नंद के चार भाई थे और एक बहन जो बेहत खूबसूरत थी। उसकी बहन ने शादी करने के बाद गेरुआ वस्त्र धारण किया। नंद ने भी बहन की रिस में गेरूए वस्त्र पहन लिए। पर बहन बहुत दिन जिवित नहीं रही। उसकी मृत्यु से नंद को लगा कि संसार से सच्चा वैराग्य उसे अब हुवा है।

अमृता की मां राज बीबी मांगा गांव, जिला गुजरात की थी। अदला बदली मे ब्याही हुई। वह एक छोटे से गांव मे गुजरांवाला में पढ़ाती थी। वह स्कूल जाने से पहले अपनी भाभी जी के साथ दयाल जी के गेरे में माथा ठिकाने जाया करती थी। दोनों अकेले और उदास थी। एक स्कूल में पढ़ाती थी।

वह दोनों एक दूसरे से मिले और एक दूसरे को पसंद करने लगे। फिर राज बीबी अमृता कि मां बनी और नंद साधु अमृता का पिता बना। उसके पिता ने जब गृहस्थ आश्रम स्वीकार किया। तब अपना नाम करतारसिंह रखा लिया। वह कविता लिखते थे इस कारण उनका उपनाम पियूष रखा गया। दस वर्ष बाद जब अमृता का जन्म हुआ तब उनका जो पियूष नाम था इस नाम के शब्द का पंजाबी में उल्टा करके अपना बेटी का नाम उन्होंने अमृता रखा। और अपना नाम हितकारी।

"फकीरी और अमीरी दोनों अमृता के पिता के स्वभाव में नहीं थी।"[11] अमृता के मां ने अमृता को एक बार बताया था की पिताजी का एक और भाई सन्त हरनाम सिंह कहने लगा उसका बड़ा भाई ब्याह करवाना चाहता था। अच्छी भली सगाई होते होते रह गई क्योंकि उसके पास अपना मकान नहीं था। पिताजी कवि थे कविताएं लिखते थे और संपादक भी थे। पिताजी दिन भर सोते थे और रात भर जागकर लिखते थे। पिताजी की जान पहचान बहुत थी। अमृता के पिताजी अच्छे आदमी थे। अमृता जी के पिताजी बहुत दयालु थे।

1.3 वैवाहिक जीवन

शादी के पहले 'अमृता कौर' थी और शादी के बाद वह 'अमृता प्रीतम' बन गई। अमृता प्रीतम के पति सांगीतकार थे। अमृता के पत्ती का नाम साहिर था। अमृता की शादी होने के बाद उन्हें बच्चे नहीं हो रहे थे। तब उन्होंने एक बच्चा दत्तक ले लिया और फिर बहुत समय के बाद उन्हें एक लड़का हुआ। अमृता एक बेहद भावुक और संवेदनशील मां थी। उन्होंने अपने बच्चो का लालन- पालन बड़े लाड प्यार से किया। उन्होंने अपने बच्चो का दर्द खुद झेला था। मगर अपने मन के दर्द को भीतर ही छुपाकर रखा। सहिर और अमृता के बीच दुरीया पैदा होने लगी। उनके रिश्ते में कड़वाहट की वजह से दूरियां पैदा हुई। तलाक होने के बावजूद भी अमृता को साहिर से लगाव था। फिर भी वह अपनी भावना अपने मन में ही छुपाती रही। साहिर अमृता को तलाक देना नहीं चाहता था,लेखिन बाद में तलाक के लिए वह तब राजी हुए।

जब वह स्वयं दूसरे के साथ शादी करनी चाही थी। अमृता साहिर से बहुत प्यार करती थी । १९८० में साहिर की मृत्यु हो गई। उनके भी फासले बहुत बड गए और वह एक दूसरे से अलग हो गए। इमरोज और अमृता जी की मुलाकात एक पुस्तक की वजह से हुई। अमृता को अपने पुस्तक के लिए कवर डिजाइन करना था। तापमान दोनों की मुलाकात हुई। तब से उन दोनों में बहुत अच्छी और गहरी दोस्ती बन पाई। "इमरोज ही के बारे में अमृत जी लिखा है कि वे चांद की परछाइयां में से रात की अंधेरे में उतरे और उनके सपनों में चले आए।"[12] दिल्ली में वे दोनों एकही घर में रहते थे। उन दोनों का एक दूसरे से प्यार था पर प्यार का जिक्र कभी नहीं किया। एक दूसरे का अच्छी तरह से खयाल रखते थे। अमृता इमरोज़ के साथ कई वर्षा रही। इमरोज हमेशा से ही अमृत के आसपास ही रहा है। वह अमृता जी की बहुत अच्छी तस्वीर बनाता था। अमृता को रसोई घर में खाना बनाने के लिए मदद करता था। अमृता के मन की बात आसानी से जान पता था। अमृता जी ने उनके लिए एक अलग से किताब बनाई थी जिसमें अमृता ने इमरोज़ के बारे में लिखा था।

1.4 शिक्षा

अमृता प्रीतम जी की शिक्षा लाहौर में हुई। उनका पहला गुरु देखा जय तो उनके अपने पिताजी ही है। उन्होंने ही लिखना सिखाया। घर में किताबो के अलावा और कुछ नहीं था। चारो तरफ किताबे ही किताबे थी।

1.5 कृतित्व

अमृता प्रीतम जिन्हें २० वी सदी की पंजाबी कवियत्री और लेखिका जो प्रसिद्ध केवल भारत में नहीं बल्कि विदेशों में भी है, उनकी कई भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ है। अमृता जी की कई विधाएं है। जैसे की कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आत्मकथा आदि। उनके काव्य संग्रह के लिए सन १९५६ में "सुनेहदे" के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। अमृता प्रीतम को अपनी शानदार करियर में कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 'पंजाब रत्न पुरस्कार' अमृता को पंजाब द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार की पहली प्राप्तकर्ता बनी। यह पुरस्कार कला साहित्य विज्ञान संस्कृति और राजनीति के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वालों को दिया जाता है। उनके करियर के बाद के दौरान में पुणे पाकिस्तान की 'पंजाबी अकादमी' द्वारा भी सम्मानित किया गया। पद्म पुरस्कार १९६९ में कल और साहित्य में योगदान के लिए उन्हें भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्म श्री' मिला। २००४ में उन्हें सर्वोच्च नागरिक पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कविता संग्रह

ठंडियां किरना १९३५

अमृत लहरां १९३६

जिउंदां जीवन १९३९

तरेल धोते फूल १९४१

ओ गीतां वालिया १९४२

बदलां दे पल्ले विच १९४३

सांझ दी लाली १९४३

निक्की जिही सुगात १९४४

लोक पीड़ १९३३

पत्थर गीटे १९४६

लामियां वाटां १९४८

मैं तवारीख हां हिंद दी १९४९

सारधी वेला १९५१

सुनेंहडे १९५५

आशोका चेत्ती १९५८

कस्तूरी १९५९

नागमणि १९६४

कागज़ ते कैनवास १९७०

उपन्यास

डॉक्टर देव १९४९(हिंदी,उर्दू, गुजरात,मलयालम, अंग्रेजी और असमिया में अनुदित किया गया है)

पिंजर १९५०(हिंदू,उर्दू, गुजरात, मराठी, मलयालम, अंग्रेजी, सर्बो और इंडोनेशिया में अनुदित है)

आह़लणा १९५२(हिंदी,उर्दू और अंग्रेजी में अनुदित है)

आशु १९५८(हिंदी उर्दू में अनुदित)

इक सवाल १९५९(हिंदी और उर्दू में)

बुलावा १९६०(हिंदी और उर्दू)

बंद दरवाजा १९६१(हिंदी उर्दू, सिंधी,मराठी और गुजराती में)

रंग दा पता १९६३(हिंदी और उर्दू)

इक सी अनिता १९६४(हिंदी उर्दू अंग्रेजी और मराठी में अनुदित)

चक नं.छती १९६४(हिंदी उर्दू अंग्रेजी मराठी और सिंधी मे अनिदित)

धरती सागर ते सिपियां १९६५(हिंदी उर्दू और मराठी)

दिल्ली दियां गलियां १९८६(हिंदी, मराठी मे अनुदित)

एकता ते एरियल १९६९(हिंदी और अंग्रेजी)

जलावतन १९७०(हिंदी और अंग्रेजी)

यात्री १९७१(हिंदी,अंग्रेजी, बांग्ला, मलयालम, सर्बो और डच में अनुदित)

जेबकतरे १९७१(हिंदी, अंग्रेजी और मलयालम में अनुदित)

अग दा बूटा १९७२(हिंदी अंग्रेजी मे अनुदित)

पक्की हवेली १९७२(हिंदी उर्दू अंग्रेजी और मलयालम)

अग दी लकीर १९७२(हिंदी में अनुदित)

कच्ची सड़क १९७५(हिंदी में अनुदित)

कोई नहीं जानदां १९७५(हिंदी अंग्रेजी और गुजराती में अनुदित)

उनहा दी कहानी १९७६(हिंदी में अनुदित)

दूसरी मंजिल १९७७(हिंदी उर्दू और अंग्रेजी)

तेहरावा सूरज १९७९(हिंदी, अंग्रेजी और मराठी में अनुदित)

उनीजा दिन १९७९(हिंदी अंग्रेजी, मराठी और मलयालम में अनुदित

कोरे कागज १९८२(हिंदी, मराठी,मलयालम और गुजराती में अनुदित

न राधा न रुक्मणि १९८४(हिंदी और एन बीटी द्वारा ग्यारह भारतीय भाषाओं में प्रकाशित)

एक थी सारा १९८६(हिंदी में लिखित,अंग्रेजी में प्रकाशित)

खबरनामा १९९४(हिंदी और अंग्रेजी में अनुदित)

जला वतन जेव करते दिल्ली की गलियां आदि अनेक उपन्यास नारी की इस कथा को चित्रित करते है। पंजाब साहित्य जगत में उपन्यासो में "डॉक्टर देव,पिंजर,और आल्हण यह बहुत चर्चित है।

सफरनामा - इकी पत्तियां था गुलाब (1973)

आत्मकथा

रसीदी टिकट १९७६(हिंदी , गुजराती, मराठी, उड़िया मलयालम, फ्रेंच,उर्दू, बांग्ला, में अनुदित)

कहानी संग्रह

अमृता प्रीतम की यादगार कहानियां, 2010

कैली कामिनी और अनिता ,2011,

कच्चे रेशम सी लड़की ,2009, किताब घर प्रकाशन।

अनंत नाम जिन्यासा

कहानियां जो कहानियां नहीं है

कहानियो के आंगन में।

हीरे दी कनी

लतिया दी छोकरी

पंज वरा

लंबी सड़क

इक शहर दी मौत

तीसरी औरत

संस्मरण

कच्चा आंगन

एक थी सारा

अन्तयात्रा

अक्षरों के साये,2016, प्रकाशक राजपाल

निष्कर्ष

इस अध्याय के अंतर्गत लेखिका अमृता प्रीतम का जीवन परिचय और उनके लिखी गई सारी विधाएं दिखाई पड़ती है। अपनी जिंदगी में जो कुछ भी उन्होंने जिस तरह से सफर किया उन सब का प्रभाव इस में दिखाई पड़ता है।

संदर्भ

1.प्रीतम, अमृता. “अक्षरों के साये”, संस्करण : 2016, प्रकाशक : राजपाल प्रकाशन, पृ 1

2.प्रीतम, अमृता. “अक्षरों के साये”, संस्करण : 2016, राजपाल प्रकाशन, पृ 14

3. प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, संस्करण : 1978, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स ,पृ 5

4. प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, संस्करण : 1978, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स पृ 3

5.प्रीतम, अमृता. “अक्षरों के साये”, संस्करण : 2016, प्रकाशक : राजपाल प्रकाशन, पृ 13

6.प्रीतम, अमृता. “अक्षरों के साये”, संस्करण : 2016, प्रकाशक : राजपाल प्रकाशन, पृ 16

7. त्रिलोक, उमा. “अमृता इमरोज़”, संस्करण : 2006, प्रकाशक : पेंगुइन बुक्स, पृ 6

8. त्रिलोक, उमा. “अमृता इमरोज़”, संस्करण : 2006, प्रकाशक : पेंगुइन बुक्स पृ 7

9. त्रिलोक, उमा. “अमृता इमरोज़”, संस्करण : 2006, प्रकाशक :पेंगुइन बुक्स, पृ 7

10.प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, संस्करण : 1978, प्रकाशक : हिंदी पाकेट, पृ 1

11.प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, संस्करण : 1978, प्रकाशक : हिंदी पाकेट पृ 2

12.प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, संस्करण 1978, प्रकाशक : हिंदी पाकेट , पृ 2

द्वितीय अध्याय

नारी जीवन

2.1समाजिक जीवन

सामाज में हो रहे रूढ़ोयों को देख सकते है। हमेशा स्त्रियों के मन में डर बना रहता है कि कहीं कोई मर्द छेड़ न दे, कहीं कोई बुरी नजर से उन्हें देख न ले। ऐसी औरतों के मर्द भी अधिक शक्की होते है और वे इस आधार पर हमेशा उन्हें पीटते रहते हैं। "देश में प्रचलित धार्मिक कुरीतियों, विकृतियों, अंधविश्वासो,के कारण नारी मुक्ति आंदोलन केवल शहरों में उच्च वर्ग की स्त्रियों तक ही सीमित होकर रह गया।"[1] समाज में बदनामी होने के डर से स्त्रियां चुप-चाप अपना मुंह बान करके रहती है क्योंकि उनकी मानसिकता अभी भी पुरुष प्रधान समाज में संचालित होती है। स्त्रियों को अपने अधिकारो की जानकारी होना भी आवश्यक है। तभी उनकी हीन भावना खत्म हो पाएगी। तभी तो स्त्रियां केवल अपने कर्तव्यों को ही जानती है और किसी चीज की उन्हें जानकारी नहीं है। अधिकारों से वे अनजान है। ग्रामीण जगहों पर जो अनपढ़ स्त्रियां है,उनको जागृत करने के लिए विशेष आयोजन गांव में करना भी आवश्यक है। रमणिका गुप्ता के संदर्भ में वह यह कहना चाहती है कि "वैदिक कल में औरत को बराबरी का हक हो पर जो स्त्री उसे संस्कृति की विरासत में हमें मिली वह असुर मर्दिनी नहीं बल्कि भयभीत चुहिया से भी बतर बुरी तरह शमी और डरी हुई स्त्री थी।"[2] मध्यवर्गीय समाज की औरत आत्महत्या करने के लिए न जाय। और

तथा कथित निम्न समाज की औरत उसे जुर्म मानकर ना स्वीकारे। वे रूपल बजाज की तरह लड़ना और झांसी की रानी की तरह लड़ना सीखे उनके ऊपर जो शोषण हो रहे हैं उनकी तरफ वह आवाज उठाएं। वर्तमान भारत सरकार द्वारा औरतों को बलात्कार के लिए अपने लिए सुरक्षा की व्यवस्था करवाने की सलाह होना केवल पलायन की प्रतीक है बल्कि पराजित मानसिकता के साथ-साथ औरत को वस्तु मानने की मनोरूति की शोषण है। वह अपने यौवन काल में राजनीति में प्रवेश करती है तो पढ़ी-लिखी योग्य विदूषी होने के बावजूद भी एक स्त्री की तरह ही देखी जाती है यानी एक वस्तु समझी जाती है जो बोलने के लिए ही बनी है। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए वह राजनीतिक गिद्धों को ना करती है और खतरे की मोल लेती है। औरत का केवल स्वतंत्र होकर निर्णय ले सकता या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाना अपने फैसले खुद लेना अपने आप को अपने आप को दूसरों पर निर्भर न रखना ही उसकी अस्मिता नहीं है सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का भूत का दृष्टिकोण भी शामिल है। पुरुष के बराबर जो अधिकार स्त्री के चयन वर्ण और न करने की स्वतंत्रता स्त्री की अस्मिता की मुख्य शर्ते हैं। दरअसल स्त्री पैदा नहीं होती पैदा होने के बाद में उसे स्त्री बनाई जाती है पैदा तो वह मनुष्य के रूप में होती है जो लिंग की अलग-अलग रखता है। लेकिन इस लिंग की भिन्नता के साथ जो मौत होती। दोनों में विवेक का सूत्रपात किसी मानसिकता से होता है बदलाव यही अपेक्षित है और

अस्मिता की मांग तब तक जारी हो रहेगी जब तक तेरी भी अपनी मां धरती की ग्रंथि से स्वयं अपने को मुक्त नहीं करती। स्त्री अस्मिता और शब्द का गहरा रिश्ता है यह स्पष्ट है। सही मायने में देखा जाए तो स्त्री के अस्मिता के निर्णय में शब्द का बहुत महत्व रहा है। शब्द मनुष्य को जो अभिव्यक्ति की ताकत देता है उसी से स्त्री को वंचित रखने की धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक षड्यंत्र हमेशा से होती चली आ रही है। "नारी की अस्मिता साहित्य में जहां कविता कहानी उपन्यास आत्मकथा जीवनी विचारात्मक आले निबंध खंड काव्य और पत्रकारिता अभिनय नृत्य कला शिल्प कला यदि के माध्यम से उभरती वहीं सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक स्तर के साथ-साथ तकनीकी कुशलता प्रबंधन यहां तक की अंतरिक्ष यात्रा में भी उसने अपने सहभाग किया जाए के माध्यम से विकास के झंडे गए।"[3]

ग्रामीण स्तान पर विकास और शिक्षा स्त्रीयों के लिए होना आवश्यक है। अपने आधार पर ही कार्य करना से उनके व्यक्तित्व का विकास होगा जिससे उनमें आत्मसम्मान जगेगा। जो उन्हें शोषण से बचने के लिए प्रेरित कर सकता है। गांव में देखा जाए तो लोगों में शिक्षा न होने के कारण अंधविश्वास उनमें रहा है। वह अंधविश्वास में ज्यादा विश्वास करते थे। सरकार बलात्कार की शिकार लड़कियों को उसी समय रोजगार देकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रधान कर दे तो वे सामाज से भी सम्मानित हो जाएंगी और मानसिक तौर पर भी सुरक्षित महसूस करेंगी। समाज में रुढियों के कारण भी स्त्रियां भयंकर शोषण का शिकार होती रहती हैं। बाल विवाह

हो रहे थे। बलात्कार की तो गिनती ही नहीं कि जा सकती थी। आज भी किसी ग्रामीण औरत या झूग्गी झोपड़ी वाली महिला के सामने पेट भरने का सवाल बहुत गंभीर तरीके से देखने को मिलता है। मर्द अगर उसका पेट भरता है तो यही उसके लिए काफी है।

अमृता प्रीतम के कहानी और उपन्यास कई सारे विधाओं में स्त्रियों की परिस्थितीयों को दिखाया गया है। स्त्रियों में आजादी की लड़ाई के दौरान भी जागरूकता एक सार्थक रूप में उजागर हुईं थीं। थोड़ी संख्या में ही सही लेकिन औरतों का शिक्षित होना भी अलग अलग क्षेत्रों में जरूरी है। उनके विकास का कारण बना देश में प्राच, धार्मिक, कुरीतियों, अंधविश्वासो के कारण नारी मुक्ति आंदोलन केवल गांवो में निम्न वर्ग की स्त्रियों तक सीमित है। "यही सही है कि इन ५० वर्षों में भारत में स्त्रियों बड़े बड़े स्थान पर पहूंच गई है नेता, मंत्री, पायलट, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, न्यायधीर, ट्रक ड्राइवर, अंतरिक्ष यात्री आदि लेकिन देश की लगभग ९५ स्त्रियां अभी भी अपने जड़ तथा रूढ दायरे तोड़कर बाहर नही आ पाई है।"[4] जब तक औरतों को शिक्षित कर उन्हें आर्थिक स्तर पर स्वावलंबी बनाकर हर क्षेत्र में विकास का अवसर नहीं मिलेगा,तब तक कुछ स्त्रियों की प्रगति को भारत की सभी या अधिकांश स्त्रियों की प्रगति नहीं माना जा सकता। अधिकांश श्रमिक स्त्रियां अशिक्षित होती है।

दरअसल अंधविश्वासो के कारण वे स्वयं ही अत्याचार की ज्यादा शिकार होती है। उन वर्ग में इस अध्विश्वासो को औरत और पुरुष दोनों समान रूप से झेलते हैं। यही

कि इन अंधविश्वसो के कारण औरतों को मानसिक वेदना होती है। परिवार और समाज में स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले योगदान का हमेशा महत्व रहा हैं। शतपथ ब्राह्मण से यह ज्ञात होता है कि “नारी सर्वशक्ति सम्पन्न मानी गई तथा विद्या, बुद्धि, यश और संपत्ति की प्रतीक मानी।”[5] स्त्रियों का महत्व धीरे धीरे इतना बढ गया है कि एक अकेला पुरुष स्त्री के बिना अपूर्ण और अधूरा समझा जाता है।

नारी आर्थिक एव समाजिक समस्यायों से संघर्ष करती रही है। एक तरफ पूंजीपति वर्ग है और दूसरा ओर सर्वहारा वर्ग है। “प्रभा जी भारत की मूल समस्या रोटी के संबंध में लिखा है कि यहां इतनी गरीबी है कि लोग बासी रोटियां खा लेते हैं।”[6] स्त्रियां आर्थिक विवशता के कारण घर की डांट डपट सुनती रहती हैं। लेकिन घर वालों का कहना कभी दिल पर नहीं लेती। उनको प्रसन्न करने का एक भी मौका नहीं छोड़ती। व्यवसाय के लिए मारवाड़ी समाज के युवाको को घर छोड़कर बाहर जाना पड़ता है। समाज की मानसिकता संकुचित होती है। समाज दो वर्गों में विभाजित है। एक वर्ग धन संपन्न यानी की उच्च वर्ग और दूसरा आम आदमी का जो समाजिक नाते रिश्तों का निर्वाह करता है। प्रगतिवाद चिंतन के कारण आम आदमी साहित्य का केंद्र बिंदु बना है।

स्त्री पुरूष यह दोनों गाड़ी के दो पहिए जैसे है। स्त्री तो जीवन की वह धुरी है, जहां से जीवन कार्य करना होता है। सुदर्शन भाटिया के संदर्भ में वह कहते है की “उनकी लघुकथाओं में नारी जीवन के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला है। समाज में घटित

घटनाओं पर प्रकाश डालना उन्हें अपना कर्तव्य लगता है।"8 पति पत्नी के रिश्तों में झगड़ा होने से या मर्द दारू पीकर घर में तमाशा करता है तब होता है झगड़ा। पर समाज को लगता है की सारी गलती सिर्फ औरत की ही होती है। दलित स्त्रियों को लेकर कुछ कहानियां सुशीला टैगोर ने लिखी है उन्होंने स्वयं भोगा है और अपनी पात्रा के माध्यम से भी समाज के साथ अपने साहित्य को जोड़ती है। मैथिली पुष्पा ने भी गांव के आम लोगों के बीच से नायक नायिका एक झूठी है उनकी नायिका यह मध्य पर किया ग्रामीण अस्मिता का विकास करती है जिनके पास बड़े परिवार बड़ी शिक्षा नहीं पर जीने की इच्छा स्वर निर्णय आत्म और हौसला है। पत्रकारिता में भी स्त्रियां आगे आ रही है और स्वतंत्र रूप से स्त्री विषयक एवं अन्य लघु पत्रिकाओं का संपादन कर रही है। अभी तक का इतिहास बताता है कि स्त्री अस्मिता के तेज से शब्द साहित्य जरूर प्रभावित हुआ है उसके विकास के साथ शब्द का रूप बदला है परिवेश बदला है और स्त्री दृष्टि का साहित्य और अच्छा गया है। पूरे स्त्री समाज के अस्मिता ने शब्द को दीप्त नहीं किया और बहुत अभी होगा जब शब्द श्री अस्मिता के निर्माण का होशियार बनेगा शब्द की छोटे से डायरी के विकास में कि हमें इतनी अस्मिता यदि है। समाज और परिवार की स्वस्थ्य व्यवस्था के लिए नारी की पवित्रता पर जोर दिया गया। पुरुष चाहे विवाह के साथ आना यंत्र प्रेम संबंध रखे उसका चरित्र लांछित नहीं होता। जबकि उन्हीं परिस्थितियों में एक स्त्री को पापिन कहा गया है।

पति के लिए यदि बहू पानी लेकर आने में जरा सी भी देर हो जाती तो सास के स्वर से विश्वास और आशंका की ध्वनि निकलने लगती है।

सामाजिक परिवेश का एक और अनिवार्य परिणाम मान सकते हैं। किंतु यहां एक सुस्पष्ट यथार्ता आवश्यक है की रूद्र हो रही माता-पिता अपनी संतान के साथ नहीं रह पाते और यदि रहते हैं तो अधिकांश कठौता और कठिनायों के बीच मुश्किल यह है कि अलग रहकर की वीडियो के बीच समानता नहीं होती।

2.2 शिक्षित जीवन

शिक्षा न होने के कारण गांव के लोगों में अंधविश्वास बहुत है। उन्हें नही पता होता है कि किसपर विश्वास रखना चाहिए और किसपर नहीं। "रमणिका गुप्ता के संदर्भ में यहां है कि बाबा फूल और सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा विशेष कर स्त्री शिक्षा की मुहिम छेड़ी और विधवा ब्राह्मण स्त्रियों की अवहित संतानों को पाला पोसा और पड़ाया तथा वह इसी स्त्रियों को पैसा बनने से बचाया"[7]। शिक्षा न होने के कारण उन्हें साधारण चीज़ों का भी ज्ञान नहीं होता। साहित्य में शहर की पढ़ी लिखी स्त्रियां नायिकाएं बन रही है। लेकिन जब तक कारखानों खेतों खलिहानों और दूर दराज के गांवों और जंगलों में बसने खटने कमाने वाली जिंदगी से जूझने वाली फुलवा जिरवा सितवा ललिता मोसी या अन्य औरते साहित्य में नायिकाएं बनकर नहीं उभरेगी तब

तक यह साहित्य भी एकांगी रहेगा। शिक्षा न केवल इन्हें आत्मविश्वासी बनाएगी बल्कि इनमें जागरूकता की लहर भी फैलाएगी। औरतें दोहरे तिहरे शोषण की शिकार होती हैं। औरत होने के नते, अशिक्षित और गरीब होने के नाते स्त्रियां अभी भी पुरुषवादी सोच और धार्मिक अश्विश्वासो से जकडी हुई है। जो स्त्रियां मजदूरी करती है। खेतों में खटती है, सब्जी बेचती है, कोयाल बेचती है या दारू चुआती है, खदानों में खाती है, सड़को और मकानों में ईट बालू और सिमेंट ढोती है,व भले ही अशिक्षित हैं, इसलिए वे मर्द, पति, बेटों, या परिवार की वैसी गुलाम नहीं होती जैसी माध्यम परिवार की घरेलू स्त्रियां होती है। भारत में नारी मुक्ति की इस पूरी मुहिम में एकमात्र स्त्री सावित्रीबाई फुले ही है इन्होंने नारी की शिक्षा को सब कष्ट सहकर एक आकार दिया और अपनी आत्मकथा भी लिखी। कई सारे स्त्रियों ने आजादी की लड़ाई जब हो रही थी तब उन्होंने अपनी अस्मिता की मशाल को थामा। नारी मुक्ति आंदोलन के साथ ही नारी चेतना के विकास के लिए उनकी शिक्षा जरूरी थी शिक्षा के विकास से ही नारी को उनकी अस्मिता,पहचान,अभीव्यक्ति यह सब ताकत हासिल हुई।

ज्यादा तर मज़दूर स्त्रियां अशिक्षित होती है। वे शिक्षा न प्राप्त होने के कारण अपना पेट पालने के लिए को भी कम हो करती है अपने परिवार का पर भरने के लिए। उन्हें खुश रखने के लिए। अंधविश्वास के कारण वे खुद ही जुल्मों की ज्यादा शिकार होती है। उन वर्ग में इस अधविश्वासो को औरत और पुरुष दोनों समान रूप से जेलती है। यही सत्य है कि इन अध्विश्वसो के कारण औरते ही प्रताड़ित होती है, पुरुष नहीं।

“शिक्षित अशिक्षित दोनों प्रकार की स्त्रियों के लिए योग्यतानुसार रोजगार करना है।”[8] रोजगार के योग्य बनाने में लिए उनके प्रशिक्षण व शिक्षण की व्यवस्था करना ताकि वे हर क्षेत्र में काम करने की योग्यता हासिल कर सकते हैं। अन्य देशों की बजाय भारत में औरतों को मुक्ति आंदोलन की तरफ प्रेरित करने में बहुत कठिनाई सामने आती है क्योंकि वे खुद को हीन मानती है। नई चेतना उभरी तप औरतें बाहर निकल पाएगी जेल गई और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। दलित लेखकों ने भी बिना बाप के नाम वाले संतान को लेकर बहुत ही महत्वपूर्ण एवं करने आत्मकथा एक ही है और मां और ऐसे बालक की ओर से कई प्रश्न पूछे हैं समाज से। 20वीं साड़ी में भारतीय महिलाओं ने आधुनिक शिक्षा में अभी पूर्व प्रकृति की कानून आयुर्विद विज्ञान एवं शिक्षा के विविध क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं की उपलब्धियां उल्लेखनीय है।

2.3 राजनीतिक जीवन

स्त्री के मुख्या या सरपंच बनने पर उसका पति ही निर्णय लेती है लेकिन यह भी सही है कि इस प्रक्रिया में कुछ स्त्रियां ऐसी भी है कि इस प्रक्रिया में कुछ स्त्रियां ऐसी भी निकल आई है जिन्होंने अपने स्थान की गरिमा को समझकर अपनी जिम्मेदारी बहुत अच्छी तरह से निभाई है। आगे आने वाले दिनों में ऐसी स्त्रियां की संख्या बढ़ेगी ही यह निश्चित है। “रूस सबसे पहले औरतों को वोट का अधिकार दिया चूकी वहां मनुष्य की बराबरी की लड़ाई का सिद्धांत स्वीकार जा चुका था, लेकिन

वहां भी जनमानस पुरुष प्रधान ही था।"[9] भारत में आज बराबरी का अधिकार मिलने के बावजूत कुछ अपवाद छोड़ कर अधिकांश स्त्रियां वोट का इस्तमाल अपने पति, पुत्र, पिता, व भाई की मर्जी से करती हैं। भारत में औरतों को राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक समानता नहीं मिल पाई है। आज भी कई औरतों को समान मजदूरी नहीं मिलती। कई पढ़ी लिखी स्त्री नेताओं ने जो अपने आपको केवाल समाज सेवी कहती थी। रूस में सबसे पहले फोन का अधिकार और कानूनी तौर पर बराबरी का दर्जस्तियों को दिया यूरोप में तो स्त्रियों को इससे प्राप्त करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता था भारत में आजादी की प्राप्ति के साथ ही बिना संघर्ष किया शिव को यहां अधिकार में गया था। "कमल सिंहवी के संदर्भ में अलाउद्दीन खिलजी के समय पद्मिनी ने जौहर में प्राणी सागर कर कर अपने सतीत्व का बचाव और आत्म रक्षा की तो हुमायूं को राखी बेचकर चित्तौड़ की महारानी ने अपनी सूच-भुज का परिचय दिया।"[10]

2.4 आर्थिक जीवन

आर्थिक जीवन के लिए वे बहुत संघर्ष करती है। आर्थिक तौर पर पुरुष आश्रित व्यवस्था भी उनको अधिक कमजोर कर देती है। वे पति के मरने पर ससुराल या मैके के परिवार पर पूरी तरह से निर्भर रहती है। "स्त्रियां बाहर से कमाकर पैसा नहीं लाती इसलिए विधवा या बोझ होने पर या दहेज में पति के राशी लाने पर उन्हें ही मानसिक वेदना हो जाती है।"[11] निम्न वर्ग की स्त्रियां जहां एक और मर्द के साथ

मिलकर या अकेले ही खेत खलिहान या अन्य उघमों से पैसा कमाकर लाती है। औरत कमाऊ हाथ होती है। चाहे पिता के घर में हो या पति के घर में इसलिए इनके समाज में कन्या शुक्ल दिया जाता है। दहेज भी दिया जाता। आर्थिक समस्याओं के कारण परिवार का पेट भरने के लिए भीख मागकर अपना और अपने परिवार की वेवस्था करती है। “प्रभा खेतान जी की संपूर्ण संवेदना उस निम्न वर्ग की श्रमजीवी स्त्रीयों के प्रति है जो आर्थिक दृष्टि से संपन्न परिवारों में रात दिन अथक परिश्रम करती हैं।”[12] प्रभा खेतान के साहित्य में किशन को अपने व्यवसाय के लिए अपने पत्नि के गहने बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा तब उसने अपने आपको हीन समझा। उसने अपना व्यवसाय शुरू किया और एक दिन उसने अपने व्यापार में सफलता प्राप्त कर ली। मध्य वर्ग की स्त्री हमेशा पैसे के बारे में ही सोचने को विवश है। वह रूपये दो रूपये का हिसाब रखती है। बाजार में सब्जी सस्ती मिले इसके लिए घंटा भर घूमती है। आर्थिक स्थिति के साथ जीवन में परिवर्तन होना आवश्यक है। आदिवासियों की आर्थिक परिस्थिति बहुत कमज़ोर है।

2.5 धार्मिक जीवन

इस्लाम में औरत को बराबरी का दर्जा दिया जाने की चर्चा है लेकिन उसके धार्मिक अपने मत ने इस्लाम के कानून और नियमों में उसे दोयम दर्जे पर ही रखा। हर धर्म ने औरतों को छोटा ही माना है। किसी ने नाचने वाली मोहिनी कहकर। औरतों को प्रेम भी करना मना था किया ती उन्हें जिंदा दीवार में चुनवा दी गई। उदारण में

लिए देख सकते है कि "द्रोपती को तरह भरी सभा में नंगी कर दी गई या शाप की धमकी देकर गार्गी से चुप करा दी गई।"[13]

2.6 संस्कृति और नारी

१९११"डॉ राजकुमार द्वारा वाक्य है कि पश्चिमी संस्कृति में नारी का पत्नि और प्रेयसी रूप प्रधान है, भारतीय संस्कृति में मां का संस्था सर्वोपरि है।"[14] शक्ति के बिना संसार में न तो किसी लौकिक कार्य में सफलता मिलती है, और न ही किसी साधना से सिद्धि। स्त्री और पुरूष दोनों मिलकर जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई है। पूरक होने के बावजूद भी पुरुष की जन्मदात्री और शक्ति होने से स्त्री का स्थान पुरुष से श्रेष्ठ स्त्रियों से ऊंचा माना जाता है। भारत का इतिहास बताता है कि प्राचीन काल में स्त्रियों की स्वतंत्र और गरिमा दोनों को पूरी मान्यता दी गई थी। संस्कृत युग में तो औरत और शूद्र को लिखना पढ़ना तो दूर नाटक के संवाद भी संस्कृत में बोलने की इजाजत नहीं थी

2.7 पारिवारिक जीवन

परिवार में मां की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह सभी के लिए दयालु भाव से समर्पित करती है। वह भविष्य के स्वप्न के आनंद प्राप्त करती है। उसकी संपूर्ण संवेदना, चिंता अपनी संतान के प्रति होती है। मां के द्वारा परोसी गई रोटी केवल भूख शांत नहीं करती बल्की खुशी प्रधान करती है। "प्रभा खेतान के द्वारा मार के

प्यार को सिद्ध करने के लिए किसी साक्ष्य की आवश्यकता नहीं होती उसका प्यार गर्म रोटियों की तरह सिका हुआ होता है।"[15] भारतीय नारी अपने परिवार के प्रति कर्तव्य का निर्वाह करती है। घर के कामों में इतनी उलझी हुई होती है की प्रकृति का आनंद नहीं उठा सकती। मध्य वर्ग की स्त्री अपनी गृहस्थी के। छोटे बड़े कार्यों में आंदानुभूति प्राप्त करती है। सुबह उठकर चूल्हा सुलगाना, रोटियों पकाना और उन्हें पति के टिफिन बॉक्स में सहजकर रखना। पति के लिए समर्पण ही उसका आनंद है।

नारी केवल घर के कार्यों में ही व्यस्त नहीं होती बल्की कामकाजी स्त्री ऑफिस की फाइलों में कार्यमग्र होती है। जीवन में नारी की यह विवशता है कि उसके एकरसता भरे जीवन में कोई आनंद नहीं है। नारी को परिवार और समाज के प्रति प्रतिबद्ध होकर जीना पड़ता है। यदि वह अपने पति के अन्याय अत्याचारों के विरोध में तलाक लेना चाहती है तो उसे कटघरे में खड़ा कर असंख्य प्रश्नों से उसके मन मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा की जाती है।शल्य चिकित्सा की जाती है। भारतीय समाज में स्त्री पारंपरिक रूप में ही जीवित रह सकती है। यहां परिवार की अपनी एक पहचान है। स्त्री परिवार के साथ रहकर ही आनंदानूभूति पा सकती है।

सब कुछ कितना सुना सुना लगता है। सास बहू के संबंध में बाधा तो होती रहती है। प्रभा खेतान ने लिखा है की "परिवार में रहते हुए नारी को अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है।"[16] । नारी के अनेक रूपों में मां का रूप सर्वाधिक गौरवशाली

रहा है। नारी अपने जीवन की पूर्णता मां बनने में ही महसूस करती है। संतान को जन्म देना उसका पालन पोषण कर उसकी रक्षा करना ही उसको परम आनंद की प्राप्ति कराता है। नारी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। भारतीय परिवार में मां अपने परिवार के प्रति प्रतिबद्ध रहती है। डॉ राजकुमार के द्वार यह वाक्य है कि “स्त्री प्रकृति की सबसे सुंदर रचना है।”[17] एक स्त्री के रूप में जन्म लेने वाली स्त्री लक्ष्मी होती है। जिससे घर का वातावरण और शोभा बढ़ती है। “लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा के रूप के मेल से ही जीवन की नियंत्रक शक्ति समान्तर अर्थ में प्रकृति की यह संतुलित शक्ति ही है।”[18] मां के बिना संसार अधूरा सा लगता है। मां अपने संतान के लिए आसमान एक कर देती है। “डॉ राजकुमार कहते है की मां बनने की कामना का प्रयत्न नारी अपने अंतस्तल में सजोती आई थी, किंतु आज नारी बच्चों की चिक चिक से परेशान आती है।”[19] आज के इस दौर में जरूरत है नारी के आत्मविश्वास में बाधक इन पुराने मूल्यों को परिवर्तन करने की और समाज में स्त्री पुरूष के बीच सहज सहकर्मी के संबंध विकसित करने की। शिक्षा, साहित्य, कला आदि के क्षेत्रों में जो उन्हें अधिकार नहीं दिया जा रहे थे वे उन्हें प्राप्त होने चाहिए। आधुनिक स्त्रियां पुरुष ने किए हुऐ अत्याचारों पर आवाज उठाती है। नारी वर्ग को जागृत करती है कि सावधान हो जाओ। नारियों को अन्याय के प्रति झुकना नहीं चाहीए। अपने मान सम्मान की रक्षा करना, समान अधिकार को प्राप्त करना। उदाहरण के लिए झांसी की रानी की वीरता देश की आन के प्रति थी। विधृता की नारी जाति के प्रति। “डॉ

राजकूमार द्वारा अपने को अबला और शक्तिहीन समझने वाली नारी समाज की अत्याचार और अन्याय के समक्ष क्रांति करने की प्रेरणा देती है।"[20] मां के रूप में नारी की गरिमा आधार और अस्मिता उनके इस उत्तर में बड़ी है भारत में सुचिता को लेकर औरत को सबसे अधिक अपमान नहीं होना पड़ता है। १९ वीं शादी में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के शायरियां ने भारतीय नारी की यक्षागता में चार चांद लगा दिए। परिवार जब अलग-अलग रहता है तब उसे कहानी आत्मा आत्मीयता संवेदनशीलता और साहस प्रेम का निर्वाह नहीं हो पाता जो पारिवारिक संबंधों के आदर्शों की याद और करोहर के रूप में शीश रह गया है मां-बाप अपने बच्चों का पालन वह बड़े होने तक करते हैं अपने पैरों पर खड़े रह पाए। कबीलों से जब गांव शहर राज्य और राष्ट्र बनने तक भी परिवार का महत्व कम नहीं हुआ संयुक्त परिवार एक प्रकार का सामाजिक बीमा भी रहा किंतु संयुक्त परिवार भी कई कठिनाइयां एवं विसंगतियां उत्पन्न हुई। वीडियो के बीच रिश्ते विषय हुए और कई बार व्यक्ति की आजादी महिलाओं और कनिष्ठ साड़ियों के स्वतंत्रता पर आंच आती रही। गांव में अभी संयुक्त परिवार की परंपरा एक चल रही है। किंतु शहरों में यह परंपरा ही संकटापन्न है। आज आधुनिक नारी एक कमाओ समझदार और दो तीन बच्चों को अपनी और यानी की मां की गोद में सिर रखे देखकर परेशानी महसूस करती है। यह बात है कि शायद शादी के बाद कहीं ऐसे कारण और बन जाते हैं कि जिसके फल स्वरुप सास और बहू के व्यक्तित्व में दरार पढ़ने लगती है। मनमुटाव हो जाता है।

“सुमन राजे के संदर्भ में यहां है कि हमारी परंपरा मैं मां को आदर और श्रद्धा का स्थान दिया गया है। वह इस आधार और श्रद्धा की अधिकारी भी है और हकदार भी है क्योंकि हर परिवार एक इकाई की दूरी होती है मां बेटे का मन को प्रेम और आदर देना स्वभावी के किंतु बहू का सासकोष नहीं है और आदर देना घर को सुखी बनाने के लिए अति आवश्यक है यदि बहू मां को आदर दे और पति को प्यार तो शायद घर स्वर्ग बन सकता है।”[24]

निष्कर्ष

स्थिति अध्याय के अंतर्गत नारी जीवन का जो सिद्धांत पाठ है उसका उल्लेख किया है।

संदर्भ

1.गुप्ता, रमणिका. “स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने”, संस्मरण : 2004, प्रकाशक : प्रकाशक शिल्पायंग, पृ 9

2.वही पृ 11

3.वही पृ 16

4.वही पृ 22

5.वही पृ 30

6. तिवारी, कामिनी डॉ. “प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श”, संस्करण : प्रथम 2011, प्रकाशक : विद्या प्रकाशन कानपुर, पृ 146

7. भाटिया, सुदर्शन. “नारी कर्तव्य एवं अधिकार”, संस्मरण : 1987, प्रकाशक : पोस्ट बॉक्स नई दिल्ली, संस्मरण 1987, पृ 61

8.गुप्ता, रमणिका. “स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने”, संस्मरण : 2004, प्रकाशक : शिल्पायंग, पृ 20

9. केलर, नलिनी डॉ. “सामाजिक विकास और प्रगतिशील महिलाएं”, संस्करण 2012, प्रकाशक : श्रुति पब्लिकेशन पृ 75

10. सिंघवी. कमल, “आधुनिक परिवार में स्त्री”, संस्करण : 2011, प्रकाशक : कल्याणी शिक्षा परिषद, पृ 98

11. राजकुमार डॉ. “नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस

12. खेतान, प्रभा. “बाजार के बीच बाजार के खिलाफ”, संस्करण : 2004, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन पृ 65

13. तिवारी, कामिनी डॉ. “प्रभा कीर्तन के साहित्य में नारी विमर्श”, संस्करण : 2018 प्रकाशक : विद्या प्रकाशन कानपुर पृ 44

14. राजकुमार डॉ. “नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ 10

15. खेतान, प्रभा. “बाजार के बीच बाजार के खिलाफ”, संस्करण : 2004, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, पृ 114

16. खेतान, प्रभा. “बाजार के बीच बाजार के खिलाफ”, संस्करण : 2004, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, पृ 148

17. राजकुमार डॉ. “नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस पृ 110

18.अरोड़ा, सुधा. “आम औरत जिंदा सवाल”, संस्करण : 2008, प्रकाशक : सामायिक प्रकाशन,पृ 25

19. राजकुमार डॉ. “नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस पृ 124

20. राजकुमार डॉ. “नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस पृ 193

21.राजे, सुमन. “इतिहास में स्त्री”, संस्करण : 2012, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, पृ 65

तृतीय अध्याय

अमृता प्रीतम की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

3.1 बाल विवाह और स्त्री

हमारे समाज में पहले से ही कई ऐसी परंपराएं चली आ रही है। जिनकी वजह से मनुष्य के दैनिक जीवन पर बहुत गंभीर तरीके से प्रभाव पड़ा है। खासकर लड़कियों पर प्राचीन समय के प्रथाओं में से एक 'बाल विवाह' भी है। यह एक रूढ़िवादी प्रथा है। यह प्रथाएं बच्चों की खुशियां, हक और अधिकारों को एक झटके में खत्म कर देती है। इस तरह से नारियों की स्थिति स्वतंत्रता से पूर्व बहुत ही अत्यंत, गंभीर दु:ख भरी थी। उनके यहां खाने-पीने के लाले पड़ गए थे। ठीक तरीके से खाना भी नहीं मिल रहा था। स्त्री जो थी वह भाई, पुत्र, पिता पर आश्रित थी। स्वतंत्रता के पहले भारत में मुगलों के बाद ब्रिटिश आए थे। अमृता प्रीतम की कहानी 'जंगली बूटी' में 'बाल विवाह' की प्रथा दिखाई पड़ती है। इस कहानी में नामक 'अंगूरी' को नारी के रूप में समाज के सामने लाया गया है। इसमें दिखाया गया है कि एक आदमी की पत्नी मर जाने से वह बहुत दुखी हो जाता है। "गांव की रस्म से किसी और लड़की का बाप उठकर जब यह अंगोछा निचोड़ देता है तो जैसे कह रहा होता है उसे मरने वाली की जगह मैं तुम्हें अपनी बेटी देता हूं और अब तुम्हें रोने की जरूरत नहीं मैं तुम्हारा आंसुओं से भीगा हुआ अंगोछा भी सुखा दिया है।"1 और इसी के जरीए अंगूरी का बाप अपनी बेटी उसे सौंप देता है। जो

की उम्र में बहुत छोटी होती है। उसकी शादी की उम्र भी नहीं होती। अंगूरी के गांव में जब एक लड़की 5-7 साल की होती है। तब उसका बाप लड़के के पांव छू लेता है यानी की वह लड़की उस लड़के के पांव छू लेती है। और रिश्ता पक्का कर लेते हैं। मुगल शासन आने से पहले यह बाल विवाह की प्रथा नहीं थी। इसके बाद जब मुग़ल शासन आए तब यह 'बाल विवाह' प्रथा दिखाई पड़ती है। "जब मुग़ल शसक बलात्कार और अत्याचार से बचने के लिए लोग अपनी बेटी की शादी कम उम्र में करवा देते थे।"2 उसके बाद जब ब्रिटिश आए तब ब्रिटिश शासको ने भारत की परंमपराएं, रीति-रिवाज, सामाजिक और आर्थिक स्थिति छिन-भिन्न कर डाली थी, यानी कि इस प्रकार से सामाजिक शोषण किया जाने लगा था। लेकिन कुछ ब्रिटिश शासन को ने स्वयं इसका विरोध करके लोगों के लिए शिक्षा तथा नौकरी का प्रबंध किया। बाल विवाह के इतिहास की और दिखे तो ऋग्वेदी काल से लेकर आज के आधुनिक काल तक देश में धार्मिक प्रतिबंधों के साथ बाल विवाह का प्रचलन है। उस वक्त देखा जाए तो वह लड़की की शादी के लिए 8 वर्ष यह सही समय था। बाल विवाह का मुद्दा हमेशा से ही चिंताजनक रहा है। आज के आधुनिक काल में यह कम दिखाई पड़ता है। यह भी कह सकते हैं कि बाल विवाह यह प्रथा बंद हो गई है। समाज में लोग मुगलों के जाने के बाद भी बेटियों की शादी कम उम्र में ही करते थे। बाप अपनी बेटी की शादी उम्र में बडे आदमी से करवा देते थे। उस वक्त उम्र नहीं देखी जाती थी। भारत में ही नहीं बाकी पूरे

संपूर्ण विश्व में बाल विवाह होते आ रहे थे। बाल विवाह का अर्थ है बाल यानी कि बच्चा और विवाह यानी की शादी। विवाह एक बेहद पवित्र रिश्ता होता है। लेकिन किसी भी उम्र में करना यह योग्य नहीं होता। बाल विवाह की रीति का आरंभ आर्यों के आ जाने से ही माना जाता है। भारत में बाल विवाह का आरंभ मुसलमानों के शासक के जरिए ही किया गया है। मुस्लिम शासक के दौरान हिंदू धर्म की लड़कियों का बलात्कार किया जाता था। इस कारण लड़कियां इस बलात्कार से बचने के लिए कम उम्र में ही पराई हो जाती थी। उस समय लड़कियों की मजबूरी थी। उन्हें न चाहते हुए भी शादी उनकी करवा दी जाती थी। बलात्कार होने के बाद लड़कियां घर से बाहर भी निकल नहीं पाती थी। वह घबराकर घर में ही बैठी रहती थी ताकि उनको फिर से कोई छेड़ना ले। उनको आगे बढ़ाने के लिए कोई भी हिम्मत नहीं करता। एक पिता अपने बेटी को उस राक्षसों से बचाने के अलावा और कोई दुसरा पर्याय नहीं था। जिससे उसकी बेटी उस बलात्कार का शिकार न हो। अंग्रेजों के शासन में भारत की लड़कियों का अपहरण तथा बलात्कार किया जाता था। जिस कारण उस समय की पीढ़ा अपनी लड़कियों को अंग्रेजी शासको से बचने के लिए बाल विवाह जैसी कुरीतियों को अपनाना पड़ा। इसके बाद कई लोग यह भी मानते हैं कि 19वीं शताब्दी से पहले बाल विवाह होना उनके लिए कोई मामूली सी चीज थी क्योंकि पहले के समय में लड़की से वह पूरी तरह से विकसित थी। विकसित हो जाने के बाद भी उनकी शादीयां होती रही।

उनके आयु की सीमा निश्चित नहीं की जाती थी। सन् १९२९ में बाल विवाह को भारतीय कानून के जरिए गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। लड़कियों को स्वतंत्रता देने के लिए बाल विवाह हेतु विरोध करने के कारण लोग आवाज उठने लगे। महिलाओं की उम्र 18 और पुरुषों की उम्र 21 विवाह करने के लिए यह उत्तम समय होगा। बाल विवाह करने से लडके और लड़की दोनों कि जिन्दगी संकट में पड़ जाति है।

3.2 स्त्री का शारीरिक शोषण

समाज में नारी को एक देवी के रूप माना जाता है। उसी के साथ शोषण हो रहे है। घर में नारी ही बच्चे, बुढे, पति आदी अपने परिवार का पालन-पोषण करना उसका कर्तव्य होता है। उनके बच्चों की पहचान माता-पिता के नाम से ही होती है। वैदिक काल में नारीयों कि स्थिति समाज में काफी ऊंची थी। उस समय महिलाएं पुरुषों के ही बराबर थी कई सारे कार्यों में भाग लेती थी। एक तरफ से पुरुष और महिला दोनों एक के ही समान थी उस कल में पुत्र-पुत्री के पालन पोषण में कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान हमेशा सबसे ऊपर रहा है। उस काल में नारियों की स्थिति गिरने की अवस्था में थी। उस काल में पुत्री होने से परिवार में कोई विशेष खुशी नहीं दिखाई दे रही थी। उत्तर वैदिक युग में लड़की के जन्म होते ही उसे बुरा माना जाता जाने लगा था। तब स्त्रियां विधवा होने पर उन्हें पुनर विवाह करने का अधिकार नहीं था। महिलाएं पुरुषों के समान रहना चाहती थी।

उसके बाद ११ वीं शताब्दी से १८ वीं शताब्दी के काल को मध्यकाल कहा जाता था। उस काल में स्त्रियों को दृष्टि में काल युग यह भी एक तरीके से कह सकते हैं। यहां भी बताया गया था उस वक्त की स्त्री को कभी अकेला नहीं रहना चाहिए किसी न किसी के संरक्षण में ही रहना चाहिए। एक नारी की स्थिति इस तरह से थी। एक तरह का उन्हें देवी मानकर उसकी पूजा की जाती थी और दूसरी तरफ उसका सेविका की तरह उसका शोषण किया जाता था। एक युग था जहां दक्षिण भारत में कुंवारी कन्याओं का विवाह पूर्व मंदिरों में किया जाता था तथा उनका वर्णन दो पण्डों द्वारा शोषण होता था।

अमृता प्रीतम की एक कहानी है, 'छम्मक छल्लो' जिसमें अपने परिवार का पेड़ भरने के लिए वह दिन रात मेहनत करती है और बाजार में जाकर वह कटोरिया भेजती है वह लड़की एक गरीब परिवार की होती है। जिसका पिता बिस्तर पर था। और मां घर चलती है। आर्थिक समस्या के कारण वह एक बड़े आदमी के शिकार में पड़ जाती है और वह उसका शोषण करता है। उस लड़की की कोई भी गलती नहीं होती फिर भी उसे यह सब सहना पड़ता है। वह उस आदमी पर विश्वास रखें इस नजरिए से गई थी कि अगर वह आदमी कटोरीयां लेता है तो उसके बदले में उसे कुछ पैसे मिल जाए उसे और वह अपने घर अपने माता-पिता का पेड़ भरे। एक ओरत इस सोच में और गहराई में पड़ जाती है कि उसकी इज्जत लूट ली जाती है। इज्जत का मतलब यह है कि यदि वह कुंवारी है तो वह शुचित्रा मानती है। और यदि वह शादीशुदा है।

तो कोख की सुचिता को वह पतिव्रत्यय यानी पति की भोग्या होने की नैतिकता से और विधवा होने पर वैधव्य की मर्यादाओं से जोड़ती है।

पांच बहने इस कहानी में जो दूसरी बहन होती है उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार होता है। उसका बेटा सेब चुराने के कारण जेल में होता है और उसका पति घर में होता है तो उसे ही बाहर जाकर कुछ पैसे कमाकर लाना पड़ता है। और एक दिन जो बडा आदमी आता है और उससे अच्छे-अच्छे सपने दिखाता है कि वह उसके बेटे को छुड़वा लेगा और कुछ आर्थिक व्यवस्था भी करेगा इसी के जरिए वह उसके ऊपर विश्वास रखकर एक दिन शहर में जाती है। तब शहर जाते वक्त वह आदमी उसका शारीरिक शोषण करता है। उच्च वर्ग के जो लोग होते हैं वह अपने फायदे के लिए निम्न वर्ग के लोगों का फायदा उठाते हैं उनका शोषण करते हैं।

समाज औरत के साथ बुरा व्यवहार ,छेड़खानी करता है। उंगली औरत पर उठाई जाती है। एक आदमी कुछ भी करें लड़की के साथ समाज उसे कुछ भी नहीं कहता। पर आखिर में लड़की की ही इज्जत समाज के सामने दिखाई पड़ती है । उस औरत की कोई भी गलती नहीं होने पर भी समाज उसी को दोषी ठहरता है। बलात्कार हुआ तो वह और अपने परिवार को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहती। डॉ जाजू किरणबाला एल के संदर्भ में “बलात्कार चाहे किसी भी भावना के वशीभूत होकर किया जाए महिला को ही सहनी पड़ती है। बलात्कार के पास पीड़िता को किस मठ स्थिति से गुजरना पड़ता होगा। इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है।“3 मध्यकालीन वर्ग

में जो स्त्रियां थी उनस सब प्रकार के स्वतंत्रता छीन ली गई और उन्हें जन्म से मृत्यु तक पुरुषों के अधीन कर दिया। एक भयंकर सच यह भी है कि समाज में आज भी बेटियों को दबाकर मार दिया जाता है। बिहार राजस्थान मध्य प्रदेश में बेटियां जन्म लेते ही उसे मार दिया जाता है। स्त्रियों को पुरुषों के समान सम्मानित नहीं किया जाता था।

स्त्रियों को पुरुषों की तरह कभी भी पुरुषों के बराबर दर्जा न मिल पाया क्योंकि पुरुष आज भी वही चाहते हैं की नारी उनसे आगे ना जा पाए या आगे ना बढ़ पाए। पुरुष का संबंध चाहे किसी के साथ भी हो। वह जो चाहे कर कर सकते थे उनको पूरी स्वतंत्रता थी। वही अगर स्त्री ने किया तो उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी। उसे समाज माफ नहीं करता। और अगर एक नारी अपना जीवन अपने हिसाब से जीना चाहे तो सारे नियम बदल जाते हैं। लोग उसे नारी को कई सारे नामो से बदनाम करते हैं। उसका जीना हराम कर डालते हैं। लड़की जब शादी करके दूसरे के घर जाती है तब अपने पति के लिए अपना सब कुछ छोड़कर आती है अपने पति के ऊपर न्योछावर कर देती है। यहां सब सहन होने पर भी नारी गंभीर तरीके से खड़ी रहती है। बलात्कार की त्रासदी खेलने वाली स्त्री का तो जीवन ही बर्बाद हो जाता है। यदि पीड़िता और विवाहित है तो कोई भी व्यक्ति उसे विवाह करने को तैयार नहीं होता। ऐसे में उसके परिवार वाले भी उसका साथ नहीं देते। उस घर में रखने के लिए भी इंकार कर देते हैं।

बलात्कार की शिकार स्त्री की एक ओर तो समाज और परिवार की बुरी निगाह का सामना करना पड़ता है। तो वहीं दूसरी ओर न्यायालय में उसे बार-बार उसे अपमानित होना पड़ता है। बार-बार उसे अपमानित होना पड़ता है। "न्यायालय में बचाव पक्ष का वकील उसे इस तरह के घटिया सवाल करता है की स्त्री को लगता है कि उसे एक बार फिर सरे आम बलात्कार किया जा रहा है।"4

देश स्वतंत्रता होने के बाद लोगों के चेहरों पर खुशी दिखाई दे रही थी। उसके चेहरे पर दुख भरे आंसु दिखाई दे रहे थे। चौथी बहन को आजादी नहीं मिल पाई थी। इस कहानी में जो चौथी बहन थी वह अपनी आजादी के लिए तड़प रही थी। जब देश में लोगों को स्वतंत्रता मिली। तब सब लोग आजादी का जश्न मना रहे थे। लेकिन इस औरत पर अन्याय हो रहे थे। तब उसके साथ बहुत बुरी तरीके से पेश किया जा रहा था। उसकी इज्जत लूट गई, आजादी छिन गई। बाकी लोगों को स्वतंत्रता मिल ली लेकिन इस औरत को नहीं मिल पाई। उसका बलात्कार किया गया। कई सारे आदमियों ने उसका शोषण किया। उसी से यह बच्चा पैदा हुआ। यह बच्चा नीव की निशानी थी। बलात्कार के कारण लडकीयां, स्त्रियां घर से बाहर निकलने से डरती है।

स्त्री को इस अपराध बोध से मुक्ति पाना है। तो उसको उन्हें समझदारी से और अपने पति के सिवा अन्य किसी के मन से चिन्तन ना करें। तभी वह बलात्कार का मुकाबला कर सकती है। अगर किसी औरत के साथ बलात्कार हो जाए। तो औरत का कहना है कि उस आदमी को कड़ी से कड़ी सजा मिल जाए। उस दोषी को सजा

मिल जाए उसे जेल करवा दिया जाए। ताकि अगली बार वह किसी भी और लड़की पर बुरी नज़र ना डालें। किसी भी औरत को बुरी नज़र से ना देखें। हमेशा इज्जत से पेश आए। हमारे भारतीय समाज में हमेशा से ही बलात्कार को दोषी की सामाजिक द्वारा दंड मिलता है। इस तरह बलात्कार को शिकार औरत को भी न्याय मिलना चाहिए। काम के सिलसिले में जब गांव की औरतें बाहर रहती है तो 100 महिलाओं में से 80 वर्ष महिलाओं को यौन शोषण की शिकार होती है। यह स्थित कहीं अन्य राज्यों में भी दिखाइ पड़ता है। काम के जरिए यह महिलाएं बाहर जाती है और उनके साथ किसी तरह से बुरा व्यवहार किया जाता है। काम नहीं किया तो उनके लिए घर परिवार को संभालना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। किसी भी हालत में उनको अपने बच्चों का पेट भरना पड़ता है। जो महिलाएं शोषण का शिकार होती है वह ज्यादा तो नींद ना वर्क करती थी महिलाएं होती है।

3.3 अंधविश्वास एवं रूढ़ूयों में घिरी स्त्री

भारतीय नारी समाज में परंपराओं से मुक्ति चाहती है। जो परंपरा है रीति रिवाज सदियों से चले आ रहे हैं। जिसमें पढ़े लिखे लोग भी विश्वास रखते हैं। यह एक प्रकार का रोग है। जो समाज में फैला हुआ है। विश्वास किसी जाति समुदाय वर्ग से संबंधित नहीं है बल्कि यह मनुष्य की मानसिकता है। अंदर विश्वास में रहने से मनुष्य अपने आप में खोया रहता है। लोगों की बातों का उसे पर गहरा असर पड़ता है। वह लोगों की बातों पर विश्वास करने लगता है। इस कहानी में कार्तिक की दो

शादियां होती है। पहले उसकी पत्नी ने आत्महत्या की क्योंकि उसके गांव के जो लोग थे वह अपने आप ही सारे नियम बनाते थे। गांव के लोग और अशिक्षित होने के कारण उन्हें ज्यादा कुछ पता नहीं था। उनके गांव में एक गुनिया रहता था जो कि गांव का मुख्य माना जाता था। उसका मानना कोई भी नहीं डालता था। कार्तिक की जो पहली पत्नी थी उसे जुड़वा बच्चे हुए थे, पर यह लोगों को पता नहीं था कि एक औरत को एक साथ दो बच्चे हो सकते हैं। उसका मानना था कि उस औरत का किसी दूसरे मर्द के साथ संबंध है। इस कारण उसे जुड़वा बच्चे हुए। "Twins formation accelerates when one sperm fertilizes one egg and the fertilized the travels to the uterus this cells divides the grows into a blastocyst. In case of monozygotic twins the blastocyst further splits and develops into two embryos Monozygotic twins occurs when single fertilized egg divides into two."5.(जब एक शुक्राणु एक अंडे को निषेचित करता है और निषेचित होकर गर्भाशय में चला जाता है, तो जुड़वा बच्चों का निर्माण तेज हो जाता है, यह कोशिकाएँ विभाजित हो जाती हैं और ब्लास्टोसिस्ट में विकसित हो जाती हैं। मोनोज़ायगोटिक जुड़वाँ के मामले में ब्लास्टोसिस्ट आगे विभाजित होता है और दो भ्रूणों में विकसित होता है। मोनोज़ायगोटिक जुड़वाँ तब होते हैं जब एक निषेचित अंडाणु दो भागों में विभाजित हो जाता है)। उस गांव के लोगों ने शिक्षा न प्राप्त करने से उनकी सोच बहुत निजी थी। उनको पता नहीं था कि एक साथ दो

बच्चे हो सकते हैं उनको उतना भी विज्ञान नहीं था। “१८३० के दशक में तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैटिंग ने बिहार तथा बंगाल की स्कूल शिक्षा व्यवस्था के अध्याय हेतु का ईसाई प्रचारक और शिक्षा विद्या विलियम एडम को नियुक्त किया।”[6] एक साथ जुड़वा बच्चे होना संभव है। लोग बहुत बुरी नजर से उस औरत की तरफ देखते थे गांव के लोगों का यह कहना था कि जुड़वा बच्चे यानी एक बच्चा जो है पहला वह उस औरत का ही है पर जो दूसरा है। वह किसी नाजायज संबंध से बना हुआ है। गांव की गूनिया ने कार्तिक को कहा था कि अपने ही हाथों से अपनी पत्नी को मार डाले पर कार्तिक नहीं माना लोगों ने उनका जीना हराम कर डाला था। उनका खाना पीने तक के लाले पड़ गए थे और उसे औरत की और लोग बुरी नजर से देख रहे थे। वह लोगों की कुछ भी कही हुई बात उसे सच लगती है जो अंधविश्वास से संबंधित होती है बहुत सारे लोग अलग-अलग सलाह देते हैं जिसे उसकी मां और भी विपरीत हो जाता है और उसके मां पर परिणाम होते हैं अंधविश्वास यानी एक प्रकार का काला जादू हम कह सकते हैं जो पहले से चला आ रहा है गांव के लोग उसमें ज्यादा विश्वास रखते थे कुछ भी हो जाए वह यह कहते थे कि यहां सब कुछ सच है बल्कि वह कुछ भी सच नहीं होता विश्वास मनुष्य को कमजोर बना देता है।

उसी के साथ जो जंगली बूटी कहानी है उस कहानी में भी हमें अंधविश्वास दिखाई पड़ता है। उस कहानी में एक अंगूरी नाम की लड़की है। जो अपने गांव का एक

किस्सा सुनाती है कि उसके गांव में प्रेम कैसे करते हैं। उस गांव के आदमी जो है वह लड़की को अपनी ओर करने के कारण अपने प्रेम में पढ़ने के लिए वह किसी जंगली बूटी का इस्तेमाल करते हैं और उसे खाने की चीज में मिलाकर उस जंगली बूटी को लड़की को खिलाते हैं। तब वह उसके वश में हो जाती है। “भारत जैसे विकासशील देशों में शिक्षा की कमी अंधविश्वास वह अन्य रूढी़यों के कारण परिवार नियोजन के लक्षणों को प्राप्त करने में काफी तेजी से प्रयास किया जा रही है।”7 ऐसा करने से उस लड़की की सारी जिंदगी बर्बाद हो जाती है। एक अंधविश्वास के कारण किसी भी लड़की की जिंदगी में यह करना अच्छा नहीं होता। उस गांव में लड़कियों को ऐसे ही फंसा कर जो लड़के होते हैं। वह उसके साथ शादी करके ऐसे में उनका प्रेम विवाह होता है।

भारतीय समाज में इनकी जड बहुत ही मजबूत दिखाई देती है। हर अच्छे बुरे कामों में अंधविश्वास दिखाई पड़ता है। जैसे कि हम देख सकते हैं घर से बाहर निकलते समय अगर शिक आ जाए तो अगली चीज आने तक उसे वहीं पर रहना पड़ता है। अगर रास्ते में कोई बिल्ली गुजर जाए तो ऐसा कहते हैं कि आगे का जो कुछ भी काम हम करने जा रहे हैं उसमें कोई ना कोई बाधा आ जाएगी। पूजा करते वक्त अगर दिया पूछ जाए तो वहां पर भी अंधविश्वास है। उनका कहना है कि आगे जाकर कुछ अनर्थ हो जाएगा। आधी रात को कुत्ते का भोगना और कुत्ता अगर रोने लग जाए तो उन्हें ऐसा लगता है कि कोई कमने वाला है, उल्लू का होना। ऐसा नहीं है कि

अंधविश्वास सिर्फ भारतीय समाज में ही दिखाई पड़ता है बल्कि विदेशों में भी दिखाई पड़ता है।

आज भी कई सारे शिक्षित लोग अंधविश्वास में विश्वास रखते आ रहे हैं। कोई फायदा नहीं है समाज में विकास होने पर भी अगर पहले की ही परंपरा चलती आ रही है। पूर्व संस्कृति कुछ भी बनाने के लिए संख्या और ज्योतिषों पर भरोसा करती थी। अंधविश्वास जो पहले से चले आ रहे थे। वह समाज में हम आज भी देख सकते हैं।

नारी आज के युग में ज्यादा स्वतंत्र दिखाई देती है, पर वह स्वतंत्रता भी एक प्रकार का बंधन ही है। आज के समाज में शादी के लिए दूल्हा छोड़ने का अधिकार लड़कियों को दिया जाता है यह तक की आर्थिक दृष्टि से निर्णय लेने की जिम्मेदारियां उनके हाथ में है भले ही उस परिवार में पुरुष का कमकर लाते हो। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान प्रमुख रहा है पर मध्यकाल तक आते-आते नारी के अधिकार छीन लिए गए तभी से देश का भावात्मक संस्कार का पतन भी प्रारंभ हुआ। नारी लंबे समय से गुलाम बनी अनेक तरह के शोषण, अन्य सहती रही। उनके लिए संवेदनशीलता का भाव समाज में लाना की जरूरत है।

पांच बहने इस कहानी में जो पहले और तीसरी बहन है। उसके साथ यह बर्ताव हम देख सकते हैं। जो पहले बहन थी उसके शादीशुदा घर में ऐसा कहा जाता था कि अगर किसी स्त्री ने कोई नियम रीति रिवाज ना तोड़े हो तो वह बहुत अच्छी कहलाती है और अगर किसी औरत ने यह नियम तोड़े, तो उसे बुरा कहा जाता था। और जो

अच्छी होती है, जिन्होंने अच्छे काम किए होते हैं। उनकी तस्वीर दीवार पर लगाई जाती थी। "यह दीवार सदियों से बनी हुई है जब भी इस घर की कोई स्त्री इस सीमा ओम को लगे बिन इस घर में मर जाती है तो इस देश के लोग उसकी तस्वीर इस दीवार पर बना देते हैं।"[8] जो तीसरी बहन होती है। उसे बड़े घर में शादी करके दिया जाता है। वह पर उसे कोई भी आजादी नहीं। होती जिस दिन वह शादी करके जाती है। उसी दिन उसके सारे हक उससे छीन लिए जाते हैं। उसका कोई बोलने का अधिकार नहीं होता। उसको किसी भी चीज पर उसका हक नहीं होता है। जो कुछ भी बड़े लोग कहे उसे चुपचाप वह सुनना पड़ता है सहन करना पड़ता है। अपनी किसी भी पसंदीता देता है चीज को वह का नहीं सकती थी एक बार अगर शादी हो जाए तो उसी के घर के रीति रिवाज पर चलना होता है। उनको अपने विचार भी व्यक्त करने को नहीं मिलते। "जब कोई लड़की बड़े घर में ब्याह कर आती है विवाह की पहली रात को देश के कुशल डॉक्टर उसका ऑपरेशन करते हैं यहां बड़े घरों के रिती है।"[9] जो परिवार और समाज के लिए महत्वपूर्ण मानना जरूरी है। नारियों को उनके आत्मविश्वास और उनके मन को हीत भावना से मुक्त करना होगा। कई सारे क्षेत्र में आज भी अपनी शादी के लिए लड़का चुना यहां उनके अधिकारों से बाहर होता है। नारियों के मन में ऐसा बैठा दिया है, की फैशन के बिना उनका जीवन बेकार है। लड़की हो या औरत हो उन्हें कभी भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हुई है। स्वतंत्रता मिली है तो सिर्फ लड़कों के लिए, लड़कियों को आजादी मिल गई है, लेकिन हम देख

सकते हैं कि कई सारे और भी घरों में लड़कियों को बाहर निकलने में बहुत दिक्कत हो जाती है। उन्हें घर से बाहर निकलना यानी कि कोई बड़ा काम करने जैसा होता था। काम पर जाने के लिए भी उसे उसका परिवार नहीं देता था। उसका पति भी एक तरफ से उसका साथ नहीं देता था। लड़की जब माता-पिता के घर होती है तब उन्हें आजादी क्या होती है, यह पता नहीं चलता। जब वह शादी करके किसी पराई के घर में जाती है। तब उन्हें पता चलता है कि आजादी क्या होती है। जो सिर्फ अपने माता-पिता के घर ही मिलती थी। दूसरों के घर में प्रवेश किया तो उसे बाहर निकलना भी बहुत मुश्किल हो जाता था। अमृता प्रीतम की कहानी एक रुमाल एक अंगूठी एक छलनी। इस कहानी में जो एक लड़की होती है। उसका नाम बंटी होता है। वह बचपन में एक लड़के से प्यार करती थी। लेकिन बड़े होकर जब शादी उसे लड़के के साथ नहीं होती है। फिर भी उसकी यादें वह इकट्ठा करके अपने पास रखती है, अपनी सहेली को देती है। उसे अपनी शादी के वक्त यह सब बताती है और जो रुमाल एक याद की निशानी थी। वह रुमाल अपनी दोस्त को देती है ताकि उसके पास सुरक्षित रह सके। शादी के बाद उसे अपनी दोस्त को मिलने के लिए वह उसको खत लिखकर भेजती थी ताकि उसे पता चले कि उसकी जिंदगी में क्या-क्या चल रहा है। शादी के बाद जब अलग-अलग हो जाते हैं। तब मिलना भी मुश्किल हो जाता है। बंटी जी लड़की को बाहर बचपन में प्यार करती थी उसके साथ उसकी शादी नहीं होती है। उसके साथ नहीं हो पाई किसी अन्य लड़के से हो जाती है। तब उसके पास

सिर्फ उसकी यादें रह जाती है। स्कूल में जो प्यार था उसका राजू नाम का लड़का उसकी सिर्फ उसे एक निशानी के रूप में रुमाल को रख देती है।

3.4 स्त्री शिक्षा

आज से 100 वर्ष पूर्व काल के समय हमारे देश में अंग्रेजी शिक्षा शुरू की गई थी। शिक्षा सिर्फ पुरुषों के लिए ही बनाई गई थी। उसे शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्य करने के लिए कर्मचारी तैयार करना था इस कारण उस पर स्त्रियों को शिक्षा देने का प्रश्न उठाया नहीं गया। सामाजिक तथा बाकी के विभिन्न कामों की वजह से महिलाओं को घर की चार दीवारों के अंतर एक प्रकार से बंद किया जाता था। उनका सारा सामय घर के कामों में ही गुजरता था। उन्होंने कभी भी शिक्षा का अवसर प्राप्त नहीं किया था। “पश्चात संसार के संपर्क में क्रमश आने से पुरुषों ने धीरे-धीरे स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को महसूस करना शुरू किया।”10 वैदिक साहित्य के द्वारा क्या होता है कि भारत वर्ष के समाज में नारियों को महत्वपूर्ण स्थान मिला था। स्त्रियों के लिए शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की गई थी। स्त्रिया राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। वैदिक काल में भारतीय नारी को पुरुषों की भांति शिक्षा अधिकार प्राप्त था। उनके शिक्षा का प्रबंध भी बहुत अच्छी तरह से किया गया था। स्त्री और पुरुष इन दोनों में कभी भी भेदभाव नहीं करना चाहिए। दोनों को एक समान देखना और सभी का दर्जा देना चाहिए। जैसे की सुख, सुविधाएं शिक्षा के, एक शिक्षा की एक व्यक्ति

की शिक्षा है किंतु एक लड़की की शिक्षा पूरे परिवार की शिक्षा है। स्त्री शिक्षा का महत्व यह है, कि शिक्षा कशिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते शिक्षा के दौरान अगर उनको सीमित करने का प्रश्न हो तो वह अवसर स्त्रियों को दिया जाए। सहयोग की शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण है। लड़कियों को पढ़ने के लिए आगे बढ़ावा देना चाहिए उनकी शिक्षा पर ज्यादा जोर देना चाहिए। स्त्री शिक्षा का महत्व हमारे भारतीय समाज में जरूरी है। स्त्री शिक्षा से घर में शिक्षा मिलती है और घर में परिवर्तन देखने के लिए मिलता है। “घर की चार दीवारों के बाहर स्त्रियों का कार्य आज देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है और आगामी वर्ष में वह और भी बड़ा आकार ग्रहण कर देगा जिसका प्रभाव अधिकतर श्रेणियां पर पढ़ने लगेगा।”9 अमृता प्रीतम की कहानी जंगली बूटी में स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं दिया जाता था। उनको सिर्फ घर और उनके परिवार संभालना इतनी ही उनकी जिम्मेदारी थी। उनको उनके मन में ऐसा भर दिया जाता था की लड़कियां अगर पढेगी तो उनको पाप लगेगा। इसी कारण वह पढ़ना नहीं चाहती थी। इस कहानी में जो अंगूरी नाम की लड़की थी। उसको पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन गांव के रीति रिवाज के कारण उनको पढ़ने से मना कर दिया था। गांव में पढ़ने का अधिकार सिर्फ मर्दों को था। “औरतों को पाप लगता है पढ़ने से।”[11] भारतीय जीवन को विकसित बनाने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों को शिक्षित होना चाहिए। बौद्ध धर्म में और जैन धर्म में भी स्त्री शिक्षा का समर्थन रहा प्राचीन

काल में नारी शिक्षा की दृष्टि से समुध्द युग था। और मध्य युग में स्त्री शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं रहा। ब्रिटिश काल में महिलाओं की नौकरी तथा शिक्षा का उल्लेख मिलता है। उस वक्त लड़कियों को अलग विद्यालय खोला गया था। माध्यमिक शिक्षा आयोग के विचार में शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर स्त्रियों की शिक्षा के बारे में अलग से विचार की कोई जरूरत नहीं है। छम्मक छल्लो इस कहानी में गरीब होने के कारण और आर्थिक समस्या के कारण उस कहानी में जो छमक छल्लो नाम की लड़की थी। उसे शिक्षा प्राप्त करने में नहीं मिल रही थी। वह एक गांव की गरीब लड़की थी जो अपने माता-पिता का पेड़ पलती थी। बाजार में जाकर खुद अपने हाथों से बनाई हुईं कटोरियां भेजती थी और अपना और अपने परिवार का गुजारा करती थी। शिक्षा न प्राप्त करने के कारण उसे यह सब कुछ करना पड़ता था। लेकिन गरीब होने के वजह से भी उनकी उतनी भी स्थिति नहीं थी कि वह अपनी लड़की को पढ़ा पाए। पुरुषों के लिए जिस प्रकार शिक्षा की आवश्यकता है। उसी प्रकार की शिक्षा महिलाओं के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा की वजह से समाज में परिवर्तन देखने को मिलता है। आज के युग में पढ़े लिखे लोग भी इस अंधविश्वासों में भरोसा रखते हैं। स्त्री और पुरुष द्वारा खाना पीना एक ही तरह का होता है, तो शिक्षा भी समान होनी चाहिए। जिस प्रकार पुरुषों का जीवन शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। उस तरह से स्त्रियों का भी शिक्षा प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। भारत में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दोनों को है। स्त्री और पुरुष किसी में भी भेदभाव करना

अच्छा नहीं होता। शिक्षा यह नारी के लिए भी आवश्यक होती है शिक्षा के कारण ही समय-समय पर विकास होता आ रहा है। शिक्षा प्राप्त करने से स्त्री और पुरुष दोनों कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं और एक क्षेत्र में स्त्री कुशल है। वह घर की देखभाल के साथ अपने लक्ष्य को भी प्राप्त करने का प्रयत्न करती है। शिक्षा के बिना सरकारों का कोई मतलब नहीं है। एक शिक्षित स्त्री ही अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दे पाएगी। अपने सिक्की सिकाई हुई जो कुछ भी ज्ञान है, वह अपने बच्चों को और बाकी के लोगों को सिखा पाएगी। स्त्री अगर शिक्षित हो या तो वह अपनी शिक्षा का उपयोग समाज और परिवार के हित के लिए कर सकती है। शिक्षित स्त्री के कारण देश की आर्थिक स्थिति और घरेलू उत्पादन में बढ़ोतरी आ सकती है। शिक्षित नारी घरेलू हिसा इंसान और बाहर जो शोषण अत्याचार हो रहे हैं, उनसे बच पाएगी। यह समाज में स्त्री को शिक्षा का समान दर्जा मिले इसके लिए सरकार की पूरी कोशिश से जारी है। कहीं ना कहीं सारे राज्यों में लड़की को सीखने के लिए आवश्यक नहीं समझते हैं। इस देश में महिला सशक्तिकरण को और भी मजबूत बनाना जरूरी है। जब स्त्रियां अपने अधिकारों से परिचित होगी तभी समय-समय पर सही कदम उठा पाएगी। अकामडी़ गांव की लड़की थी और किशोर जो है वह शहर का लड़का था। किशोर के माता-पिता पढ़े लिखे थे और किशोर भी इसलिए किशोर के परिवार को पढ़ी लिखी शहरी वाली लड़की चाहिए थी। अकामडी़ के पास इतनी भी शिक्षा नहीं थी जितनी की किशोर के पास थी इसलिए उसके परिवार ने किशोर के लिए वही लड़की

चुन्नी जो उसके बराबर की थी। सामाजिक और राजनीतिक संगठन और संस्थाओं को स्त्री शिक्षा के महत्व के लिए इस समाज को जागृत करने की आवश्यकता है। स्त्री शिक्षा प्राचीन भारतीय समाज के हमेशा से ही सबसे बड़ी विशेषता रही है। मुसलमान काल में सामान्य स्त्रियां शिक्षा से अपेक्षित रही है। इस काल में बाल विवाह तथा पर्दा प्रथा का संचालन होने के कारण छोटी-छोटी महिलाओं के अतिरिक्त बाकी की स्तरीय शिक्षा से वंचित रही है। स्त्री शिक्षा के मार्ग से सबसे बड़ी बाधा धार्मिक समस्या है। जिससे उन्हें शिक्षा के लिए आर्थिक स्थिति की जरूरत थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है, कि स्त्रियों को शिक्षित तथा सामाजिक स्थिति से समान स्तर पर लाने के लिए विशेष कार्यक्रम की जरूरत है। इस कहानी में उस लड़की के ऊपर संस्कार बहुत अच्छे किए गए थे। उस लड़की ने गरीब परिवार की होने के कारण शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाई थी, पर उसके जो परिवार वाले थे। मां और पिताजी उन दोनों ने उसे लड़की पर बहुत अच्छे संस्कार किए थे। जो इस कहानी के जरिए दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने शिक्षा प्राप्त नहीं की थी लेकिन संस्कार अपनी बेटी को बहुत अच्छे दिए थे। ताकि दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार कर सके बाकी दूसरे लोगों के साथ अच्छे से बात करते वक्त दूसरों को इज्जत दे। वह मदद करें दूसरों की नजर में वह अच्छी रहे। आज के युग में सभी के लिए स्त्री और पुरुष दोनों के लिए स्त्री का जो दर्ज है वह बराबरी का दिखाई देता है। एक कहानी में गुलियाना का एक खत इसमें हमें दिखाइए पड़ता है की

गुलियाना बहुत पढ़ी-लिखी होने पर उसे देश-विदेश में जाना पड़ता है और उसी की वजह से वह अपने घर नहीं जा पाती है तो उसकी मां उसका इंतजार करती है। इतनी शिक्षा प्राप्त करने से भी उसे एक जगह काम नहीं मिल पाता। उसे देश-विदेश में जाना पड़ता है क्योंकि अपने घर में जो परिवार है उसका पालन-पोषण करने के लिए उनका पेट भरने के लिए उसे यह कदम उठाना पड़ता है। वह दिन रात एक करके अपने परिवार के लिए काम करती है। अपना गुजारा खुद करती है। दूसरों पर निर्भर नहीं रहती। बड़े बीच इस कहानी मैं वह पिता इतना पढ़ा लिखा होकर भी जब उससे बेटी होती है तब वहां थोड़ा सा निराश हो जाता है क्योंकि उसे बेटा चाहिए था बेटी नहीं। इस तरह से हम आज भी देख सकते हैं की लड़की और लड़की में भेदभाव हो रहे हैं। आज के युग में इतने पढ़े लिखे होकर भी उन्हें लड़का और लड़की इन दोनों में फर्क नहीं देखना चाहिए। "बेटा हो या बेटी जो भी जिया हो भाग्यवान हो। बेटी तो लक्ष्मी होती है इस बार बेटी तो अगले साल बेटा"।[12] क्या फायदा इतना पढ़ा लिखा होकर भी उनकी सोच इतनी निजी है।

'पांच बहने' इस कहानी में अमृता प्रीतम बताती है, कि जो पांच भरने में से दो बहने हैं। वह बहुत गरीब होती है और उनके पास शिक्षा भी नहीं होती अगर शिक्षा होती तो वह कोई अच्छी नौकरी कर पाती और अपने घर परिवार को संभाल पाती। लेकिन ऐसा नहीं है। वह कुछ मजदूरी करके अपने परिवार को एक समय की रोटी दे पाती है। पांच बहनों में से जो दूसरी बहन है। उसका पति बिस्तर पर रहता है।

और उसका जो बेटा है वह अमीर आदमी के गाड़ी से सेप चुराने के कारण उसे जेल में डाला जाता है। और वह अपने छोटी सी लड़की को लेकर मजदूरी का काम करती है। "स्त्री में एक बार अपने सूखे हुए शरीर पर निगाह दुदाई दूसरी बार लड़की के रोते हुए मुंह पर।"[13]

3.5 अन्याय सहती स्त्री

अन्याय यह शब्द स्त्री के जीवन में पहले से ही चला आ रहा है। अन्याय यह स्त्री आज भी सहती आ रही है। बहुत से औरतों पर अन्याय होते आ रहे हैं। नारी समाज का मूल आधार है और ईश्वर ने दिया हुआ खूबसूरत व्यक्ति है। उसका समाज में स्थान एक मां, स्त्री, पत्नी, बहन के लिए पहचानी जाती है। यह भी हम कर सकते हैं कि सुंदरता का एक नाम ही स्त्री से जुड़ा हुआ है। सुंदरता की लोक बात करते है तो सबसे पहले नारी की सुंदरता को स्पष्ट किया जाता है। जो संसार में एक लड़की एक स्त्री का कर्तव्य निभाती है। तब उसे लड़की या स्त्री का वर्णन किया जाता है। नारी अपनी शक्ति स्वरूप के कारण पहचानी जाती है। अगर किसी के पति का काम हो जाता है तो लोगों का यह मानना होता है कि उसके पीछे उसके पत्नी का हाथ है। एक स्त्री का हाथ होता है। इस सफलता का मुख्य प्रोत्साहन उसी को जाता है। वह जो भी कुछ करती है अपने पूरे कर्तव्य और जिम्मेदारी से करती है। अपने पति के साथ हमेशा खड़ी रहती है। "आधुनिक काल में राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना

जागृत होने के कारण वर्तमान दशा में नारियों की स्थिति में काफी सुधार आया है।"[14] महिलाओं के ऊपर पुरुषों द्वारा किए गए अन्याय दिखाई पड़ते हैं।

कहानी में उस औरत को बच्चा नहीं हो रहा था। तो उसकी सास ने अपने बेटे की दूसरी शादी करवा डाली। उसकी पहली पत्नी की इजाजत के बिना उसकी सास इंतजार कर रही थी, कि कब गुलेरी अपने ससुराल जाएगी। ताकी सास अपने लड़के की शादी करवा दे। सास ने अपनी बेटी की शादी तो करवा दी। उसकी पेहली पत्नी से पूछे बिना और इसी के साथ जो उसकी दूसरी बीवी को उसके पति से प्यार न मिलने के कारण वह कभी खुश नहीं रह पाए। उसका पति उससे बहुत नफरत करता था क्योंकि उसकी जो पहली पत्नी थी। उससे बहुत प्यार करता था। इस कहानी में देखा जाए तो दो औरतों पर अन्याय हुआ है। एक जो पहली पत्नी थी जिसको पूछे बिना उसके पति की शादी करवा दी और दूसरी जिसकी शादी उस लड़के से करवा दी जो दूसरी पत्नी थी उसकी शादी सिर्फ एक संतान पैदा करने के लिए ही थी। उसकी पहली पत्नी ने आत्महत्या कर दी। "उसने तुम्हारे विवाह की बात सुनी और मिट्टी का तेल अपने ऊपर डालकर जल मरी।"[15]

अमृता प्रीतम की अगली कहानी लाल मिर्च है। जिसमें गोपाल उस लड़की के साथ शादी तो कर लेता है। लेकिन वह सुंदर न देखने के कारण उससे अच्छा व्यवहार नहीं करता। गोपाल को तो कोई अच्छी दिखने वाली लड़की चाहिए थी जो लाल मिर्च की तरह दिखे। आखिर में उसे बेटे की जगह बेटी ही हो जाती है। उसे बेटा चाहिए

होता है लेकिन जब उसे पता चलता है कि बेटी हुई है तब उसे उतनी भी खुशी नहीं होती जितनी की बेटा होने के बाद हो जाती।

'पांच बहने' इस कहानी में चौथी जो बहन थी। उसके साथ अन्याय ही हुआ है। स्वतंत्रता के बाद सबको आजादी मिली लेकिन इस औरत को नहीं मिल पाई। उस औरत की कोई भी गलती नहीं थी फिर भी उसे अन्याय सहना पड़ा। उसे औरत को जबरदस्ती शोषण किया गया ना चाहते हुए भी। लोगों ने उसकी मदद नहीं की। उसे अकेला ही छोड़ दिया। आजादी के पास सब लोग जश्न मना रहे थे। लेकिन यह औरत अन्याय सह रही थी।

छमक छल्लो नाम की लड़की थी। उसके साथ अन्याय होने के बाद भी वहा उस अन्य के खिलाफ आवाज ना उठा पाई क्योंकि वह गरीब थी अपने माता-पिता का पेट नहीं पाल सकती थी चार पैसे कम कर वह घर लौटी थी पर जब बाजार में जाती थी तब उससे कोई भी कशटोरियां देने से मना कर देता था।

3.6 स्त्री एवं आर्थिक संघर्ष

भारतीय समाज में नारी हमेशा से अत्याचार, शोषण, बलात्कार, अन्याय ऐसी कई सारी समस्याओं से गुजर चुकी है। इसलिए भारत में उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को लेकर कई सारे क्षेत्र में इस पर बात करने का मौका मिला है। "स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक स्त्रियों की निम्न दशा के मुख्य कारण अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता,

धार्मिक निषेध, जाति बंधन, स्त्री नेतृत्व का अभाव तथा पुरुषों का उनके प्रति अनु कुछ दृष्टि यदि थे।"[16] पहले की स्त्री ज्योति वहां मजदूरी करके अपना सर घर परिवार संभालती थी लेकिन आज की जो स्त्रिया है वह शिक्षित हैं। इसलिए काम पर जाकर अपनी जो आर्थिक समस्या है उसका समाधान दिखती है। आर्थिक स्थिति के कारण कई सारी समस्याएं आ सकती है। अगर आर्थिक स्थिति ना हो तो घर में लाले पड़ जाते हैं। पांच पहले इस कहानी में जो दूसरी बहन है वह आर्थिक स्थिति के कारण अपनी बेटी को लेकर मजदूरी का काम करती है ताकि अपने परिवार को खाने के लिए कूच दे सके। इसलिए वह अपनी छोटी बच्ची को लेकर घरों-घरों में जाकर काम करती है।

'गुलीयाना का एक खत', इस कहानी में जो गुलेरी गुलीयाना नाम की लड़की होती है। वह देश-विदेश में जाकर नौकरी करती है ताकि अपना गुजारा करें और अपने परिवार का पालन पोषण करें उसे एक ही जगह नौकरी मिलना बहुत मुश्किल था। इसलिए उसे एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ रहा था।

'छम्मक छल्लो' इस कहानी में पैसों के कारण वह आगे नहीं बढ़ पा रही थी। वह बहुत संघर्ष करती थी बाजार में जाकर खुद बनाई हुई कटोरियां भेजती थी लेकिन उससे कोई भी लेना नहीं चाहता था। उसने कभी हार नहीं माना। वह रोज बाजार में जाकर प्रत्येक व्यक्ति के सामने उन्हें कटोरियां लेने के लिए आग्रह किया करती थी

और अपने पिता और माता के लिए कुछ घर में लाभ आए। संघर्ष किए बिना कुछ प्राप्त नहीं होता है। संघर्ष से ही हम आरती समस्याओं से निपट सकते हैं

आर्थिक समस्याओं के कारण लोग क्या कुछ नहीं करते स्त्रियां अपने परिवार के लिए किसी भी हद तक जाती है। किसी भी कहां-कहां पर भी काम कर लेती है। उसे जो कुछ आर्थिक समस्याओं का समाधान मिलता है।“ बृंदा कारात के संदर्भ में ग्रामीण बेरोजगारी में बेतहाश वृद्धि और उसके ऊपर से चिकित्सा सुविधा मुहैया करना और सस्ते भोजन की उपलब्धता कैसे न्यूनतम जरूर के प्रावधानों से सरकार द्वारा अपना हाथ खींच लेने के कारण गरीब महिलाओं के जीवन पर भयंकर प्रभाव पड़ा है। इसके चलते उन्हें अपना अस्तित्व बचाने के लिए ग्रामीण दौलत्तमदों के पास क्रुरतम समझौता करना पड़ता है”।[17] हर मनुष्य को अपने आर्थिक समस्या के लिए काम करना जरूरी होता है। संघर्ष के बिना कुछ हासिल नहीं हो पता। “जब से स्थाई काम के अवसर स्वीकृत होते गए हैं और ठेकेदारी तथा यार हंसता ही आधार पर मिलने वाले काम में बढ़ोतरी हुई है तब से महिलाओं के लिए सुरक्षित और सुनिश्चित कार्य स्थल के लिए उनके मोलतोल की ताकत की सीमित होती गई है ऐसी माहौल में कार्य स्थल पर ही महिलाओं का यौन शोषण होता है।”[18]

3.7 दहेज प्रथा

भारतीय समाज में कई ऐसी परंपरा है। जो अपनी खराबी के कारण आज अभिशाप बन गई है। दहेज भी ऐसी कुरीति है। जिसके कारण प्रत्येक वर्ष में हजारों स्त्रियां इसकी बलिवेदी पर चढ़ जाती है। विवाह एक धार्मिक प्रतिष्ठान है जिसमें प्राचीन काल से ही सभी पिता अपने पूरे समर्थ से धन वस्तुएं आदि अपनी नव विवाहित पुत्री को उपहार स्वरूप देते आए हैं। ताकि उसकी भावी जीवन समृद्धि से भरा हुआ हो। उपहार से बनी हुई यह परंपरा एक पूरी तरह से आवश्यक बन चुका था। लड़की को देखने से पहले ही दहेज की रकम तय हो जाती है। दहेज की बात दोनों तरफ से तय होने पर ही आगे की रसम शुरू होती है। दहेज ऐसा नासूर है जिसके कारण भारतीय समाज में कन्या का जन्म होने पर परिवार खुशियां नहीं बनाता। कन्या का जन्म होते ही उसके मां-बाप उसकी शादी की बात पर चिंतित रहते हैं। हम अक्सर देखते हैं कि जब एक कन्या किसी ससुराल में शादी करके जाती है। तो उसे उसका पति और ससुर कुछ नहीं कहता लेकिन जो उसकी सास और नन्द होती है। वह उसका जीना जरिए यह पाया गया है कि ज्यादातर लोग दहेज की वजह से कर्ज में डूबे भी है। बाकी के राज्य में जैसे आसाम और पूर्वोत्तर के राज्यों में आदिवासियों और दकितों के बीच दहेज एक ठीक सामान्य मामला था। दहेज प्रथा पहले से चली आ रही थी। गांव में शादी यानी की सबसे पहले दहेज का प्रश्न सामने आता था। अकामडी़ इस कहानी में शहर और गांव इन दोनों का वर्णन किया गया है। शहर के लोग शादी के समय दहेज के बिना बात को आगे नहीं बढ़ा देते थे। उसी की वजह

से किशोर के परिवार को लगा कि गांव की लड़की के परिवार वाले दहेज नहीं देंगे। किशोर के परिवार को प्रेम विवाह मान्य नहीं। था वह अपनी रीति रिवाज, और परंपराओं का आपमान नहीं करना चाहते थे। उसको अपने माता-पिता के विरुद्ध जाकर शादी नहीं करती थी इसलिए उसकी शादी एक अमिर लड़की से करवा देते है। ताकि लड़की वालों से दहेज में बहुत कुछ ले सके। पहले से जो परंपरा चली आ रही है। उसका आज हम बदलाव देख सकते हैं। सौभाग्य से यह आज हमें दहेज प्रथा नहीं दिखाई हराम कर देती है। इस प्रकार एक स्त्री ही दूसरे स्त्री की दुश्मन बन जाती है। दहेज प्रथा ज्यादातर गांव में दिखाई पड़ती है। जो लोग मजदूरों का काम करते हैं और उसके घर में बेटी हो तो उसके लिए दहेज देना बहुत गंभीर विषय बन जाता है। क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति उतनी भी अच्छी नहीं होती जितनी दहेज देने वालों की होती है। कई सारे क्षेत्र में नहीं बल्कि अन्य राज्यों में भी किया। राज्यों में भी गरीब के बीच साक्षात्कार के पड़ती है।

निष्कर्ष

इस अध्याय के अंतर्गत हमने जो नारियों की स्थिति थी जो समस्या थी। उनको चित्रित किया गया है।

संदर्भ

1.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, संस्करण : 1975, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली पृ 9

2.ज्योतिष, जोशी. “अजकेल”, संस्करण : 1992, प्रकाशक : विस्कान्सिन विश्वविद्यालय मैडिसन, पृ 39

3.एल, किरणबाला जाजू डॉ. “21 वीं सदी मैं स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक”, संस्करण 2014, इंटरनेशनल पब्लिकेशन प्रकाशक, पृ 42

4.एल, किरणबाला जाजू डॉ. “21 वीं सदी मैं स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक”, संस्करण 2014 , इंटरनेशनल पब्लिकेशन प्रकाशक, पृ 43

5.Terdal,R.Pavan. C.S Prabhakar Jai. “Article: Born twins fascinating fact of nature”, December 2021.

6.https://www.aajtak.in/amp/education/knowledge/story/savitribai-phule-jayanti-first-girls-school-of-india-in-bad-condition-know-more-lbse-1607404-2023-01-03#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17125716094248&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com

खेलकर पंकज, “जर्जर हालत में देश का वह पहले बालिका स्कूल जिससे सावित्रीबाई फुले ने बनवाया था”, संस्करण : जनवरी 2023

7. उपाध्यक्ष, देवेंद्र. “पालिका समाचार पत्रिका”, पालिका समाख्या, संस्करण : 1974 प्रकाशक : पालिका समाख्या नई दिल्ली

8.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, संस्करण : 1975 प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली पृ 120

9.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, , संस्करण : 1975 प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली पृ 126

10. सिंह, सुधा. “स्वाधीनता संग्राम हिंदी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र”, संस्करण : 2016, प्रकाशक : अनामिका पब्लिशस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ 85

11. अग्रवाल, सी .जे. “भारत में नारी शिक्षा”, संस्करण : 2009, प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रशासन विद्या विहार पृ 88

12. प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, संस्करण : 1975, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली पृ 11

13.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, संस्करण : 1975, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली पृ 83

14.अग्रवाल, सी .जे. “भारत में नारी शिक्षा”, संस्करण 2009, प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रशासन विद्या विहार, पृ 64

15.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानी”, संस्करण : 1975, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली पृ 81

16.पन्द्रो, सुनीता श्रीमती. “देश स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज में नारियों के प्रति कृष्णा रीति रिवाज एवं मानवीय प्रथाएं के विषय के संदर्भ में”, प्रकाशक इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव

17.कारात, बृंदा. “भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति”, संस्करण : 2008 पृ 190

18.कारात, बृंदा. “भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति”, अनुवादक उषा चौहान, संस्करण : 2008 पृ 190

चतुर्थी अध्याय

भाषा एव शैली

4. भाषा

भाषा एक साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर लिखकर, सुनकर, पढ़कर अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है। शैली साहित्य में विधाओं के कारण अलग-अलग होती है।

साहित्य विधा के निर्माण में महत्वपूर्ण तत्व भाषा है। अमृता प्रीतम साहित्य जगत् में बहुत बड़ी लिखेगा के रूप में रही है। हर साहित्यकार अपनी सीमाओं शक्तियों के आधार पर एक स्वतंत्र शैली का निर्माण करता है। शैली का महत्वपूर्ण स्थान यह होता है कि कृति को सुंदर रूप में प्रस्तुत करना। “अमृता प्रीतम की बहुचर्चित आत्मकथा रसीदी टिकट में काव्यात्मक शैली में उनकी प्रेमानुभूति की अभिव्यक्ति है।”[1] मौखिक अथवा वाचक परंपरा में मनुष्य मात्र अपने जन्म से ही कहानी लेकर कथा के साथ चलता है। कहानी हो जाना उसका लक्ष्य भी हो सकता है। “ऐतिहासिक, नैतिक, धार्मिक या हसी मजाक की कहानी मनुष्य को दिशा देती रही। समाज की दशा का चित्रण भी करती आई है। राजा प्रजा, रामायण, महाभारत ही नहीं, जातक, तांत्रिक, कथाओं, किस्सो से भी हम अपने गौरवमय अतीत को समर्थन देते आए हैं।”[2]

भाषा और शैली को साहित्य की आत्मा भी कहा गया है। डॉ सत्यपाल श्रीवत्स इनके संदर्भ में "अमृता प्रीतम ने अपनी मातृ भाषा में अपनी रचना सृजित करके भारतीय साहित्यकारों में ही नहीं अपितु विश्व भर के साहित्यकारो ने अपना वशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।"[3] जितनी भी साहित्य में विधाएं होती है, वह साहित्यकार अपनी भाषा में और शैली में लिखते है। आगर किसी रचनाकार की भाष्य पंजाबी है तो वह पंजाबी में ही लिखेंगी। और बाकी के भाषाओ में भी लिखकर उनको प्रसिद्‌ध करने का प्रयास करेंगी। उनका अनुवाद भी बाकी सारे भाषाओं में भी होता है। अलग अलग साहित्यकारों के अलग अलग लिखने की शैली होती है। सारे अलग अलग विधा में लिखने का प्रयास करते है। जब साहित्य में कोई भी विधा पढ़ते है तो उसे अलग अलग अंदाज में पेश किया जाता है। ताकि उन भाषाओ को पढ़ सके और उनकी जो शैली है उनको देख सके। सबका अपना एक अलग अलग अंदाज होता है लिखने का और उस रची हुई रचना को दिखाना।

बचपन में अपनी लिखी हुई लिखावट को पिता के द्‌वारा दिखाकर। अपनी रचनाओं को आगे बड़ाने का प्रयास करते हुए। आज अमृता प्रीतम पंजाबी की सुप्रसिद्‌ध लेखिका बन चुकी है। इन्होंने कई सारे भाषाओं में अपनी रचनाएं प्रकाशित की है। पहले वह पंजाबी में लिखती थी। और बाद में आगे जाकर वह अन्य भाषाओं में भी लिखने लगी। कई सारे अलग भाषाओं में उनके रचनाओं का अनुवाद हुआ है। उनकी

रचनाओं में अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू, संस्कृत, मराठी, आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्होंने अपने साहित्य में समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक जीवन का उल्लेख किया गया है। उन्होंने अपने कहानियों में पारिवारिक जीवन, समाजिक समस्या, आर्थिक स्थिति का उल्लेख किया गया था।

कहानियों में एक तरफ गरीबी में रहने वाले लोगों का, गांव में रहने वाले लोगो का संघर्ष, उनके उपर हो रहे शोषण का, उनके दुःख दर्द को दर्शाया गया है। उनकी कहानियों में ग्रामीण और शहरी दोनों को दिखाया गया है। उनकी एक कहानी है 'पांच बहनें' जिसमे मेटाफोर (metaphor) का इस्तमाल किया गया है। इस कहनी में बता हुए उनकी सभी बातों को मेटाफोट की जरिए बताने का प्रयास किया गया है।

निम्निलिखित भाषाओं के शब्द कहानियों के माध्यम से दिखाई दे रहे है।

तत्सम शब्द- आंख

तद्भव शब्द- काम, मां, हात आदि

पुनरुक्ति युक्त शब्द- छोटे- छोटे, धीरे- धीरे,एक- एक, बड़े- बड़े आदि।

उदाहरण - "मेरे घर के आगे नीम के बड़े -बड़े पेड़ हैं, और इन पेड़ों के पास ज़रा ऊंची जगह पर एक पुराना कुआं है।"[4]

सयुक्त शब्द - सीखा-सुना, हसती -खेलती, मां -बाप, आदि।

उदाहरण- 'बू' कहानी में से "मानक डर रहा था कि पता नहीं गुलेरी का पिता कितना रुपया मांग ले।पर गुलेरी का बाप खाते-पीता आदमी था।"[5]

देशक शब्द- कटोरा

संस्कृत शब्द

भगवान,स्वयं आदि है। उदाहरण के लिए पर गोपाल ने स्वयं ही इन्कार कर दिया था।

अंग्रेज़ी शब्द

जैसे की कार्ड, ट्रक, स्कूल, पैन्ट, टाई, डॉक्टर, इंजेक्शन,कॉलेज, रेडियो, पेंसिल, कंडक्टर, स्टेशन। ऐसे कई सारे शब्दों का प्रयोग किया गया था।

उदाहरण के लिए "हमारे स्कूल की बड़ी उस्तांदनी ने बन्ती की फीस माफ कर दी और यो उसे सी न छोड़ने दिया।"[6] इस वाक्य में अंग्रेज़ी शब्द स्कूल का प्रयोग हुआ है। "एक दिन इस पगली ने अपने हाथ में पेंसिल पकड़ी और गणित की कापी पर कोई बीस जगह उसका नाम लिख दिया। इस वाक्य में अंग्रेज़ी पेंसिल शब्द का प्रयोग हुआ है। "विवाह के कार्ड पर समाज ने राजू का नाम न लिखने दिया।"[7] इस में कार्ड यह अंग्रेजी शब्द का प्रयोग हुआ है।

मराठी शब्द

जैसे की ताई,परीक्षा, रुमाल, दुनिया, उत्तर, कपड़े, मास्टरनी, स्वच्छ, हाथ,आम, विष, गाड़ी, स्वीकार, रंग आदि है।

उदाहरण के लिए "आठवीं कक्षा जब एक नाव की तरह वार्षिक परीक्षा के किनारे लग गई तो सभी लड़कियां यात्रियों की तरह एक-दूसरे से अलग हो गईं।"[8] कभी हिंदी में जो शब्द होता है वही शब्द मराठी में भी होता है।

हिंदी शब्द

मेहंदी, उल्टी, लड़का, लड़की, मिर्ची, सिर्फ, जल्दी आदि है। बनती के हाथों में मेंहदी, बनती के बाहों मे कलीरे। साहित्य में उनके द्वारा सृजित रचनाओं ने सभी वर्ग के पाठ कों को आकर्षित किया। उनका बचपन और प्रारंभिक जीवन भले ही अमृता प्रीतम ने साहित्य लेखन में शृंगार रस की कविताओं से पदार्पण किया। अमृता प्रीतम की लेखनी, उपन्यास, कहानी, कविताओं में समान रूप से दखल रखती है। उनकी लेखन शैली ने उसके हर कृतियों को अमर कर दिया है। अमृता प्रीतम के हिंदी उपन्यास में उनके स्वयं के द्वारा प्रकाशित २८ उपन्यास,१५ कथा संग्रह, और २३ कविताएं संकलित हैं। अमृता प्रीतम के उपन्यास, कहानियां और कविताओं के न केवल भारत में बल्कि विदेशों भी लाखों पाठक रहे है। हिंदी पाठकों का बड़ा समूह अमृता प्रीतम के उपन्यासों को अमृता प्रीतम की कविता जिसमें बटवारे का दर्द मुखर हुआ है। वह मूल रूप से पंजाबी भाषा में रची गई है।

उर्दू शब्द

खिजाब, कत्ल, मुहब्बत, उंगलियां, अगर, उम्र आदि।

उदाहरण के लिए बू कहानी में "एक मर्द की मुहब्बत और जिंदगी की जरूरत आपस में इस तरह टकरा जाती है। अंगूरी ने गाया तो नहीं, पर बाहर महीनों को ऐसे गिना दिया जैसे यह सारा हिसाब वह अपनी उंगलियों पर कर रही हो।"[9]

पंजाबी शब्द

तेनु, मिलाऊंगी, आदि है। उनकी जो पहली कहानी प्रकशित हुई थी। वह उन्होंने अपनी भाषा पंजाबी में रची हुई थी।

अरबी शब्द

औरत, नज़र, कागज़ आदि है। उदाहरण के लिए गांव की औरतों को पाप

लगता है।

अपशब्द - पाप

4.1 शैली

अमृता प्रीतम के कहानियों में अलग अलग शैलीया दिखाई पड़ती है। जैसी की व्यंग्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली, विवर्णात्मक शैली, वर्णात्मक शैली, पूर्वादिप्ति शैली, मैं शैली आदि है। कहानियों में जितने भी रूप होते हैं शैलियों के जैसे की

व्यंग्यात्मक शैली

संवादात्मक शैली

विवरणात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली

- व्यंग्यात्मक शैली

जंगली बूट इस कहानी में अंगूरी अपने गांव के आदमियों को व्यंग करती है।

उदाहरण के लिए "गांव के आदमी लड़कियों को अपने प्यार में पड़ने के लिए जंगली बूट किसी खाने की चीज़ में डालकर देते है। ताकि लड़किया उनके तरफ आकर्षित हो जाय।"[10]

- संवादात्मक शैली

अमृता प्रीतम के कहानी संग्रह में देखा जाए तो संवादों का प्रयोग किया हुआ है। संवाद दो तरह होते है। एक बड़े और दूसरे छोटे। संवाद का मतलब दो इंसान के बीच हो रही बातचीत या दो से अधिक। उन दोनों के बीच जो वार्तालाब होता है उसे संवाद कहा जाता है। अमृता प्रीतम के ज्यादातर सभी कहानियों में संवाद दिखाई पड़ता है।

उदाहरण के लिए बू कहानी में गुलेरी -“आगे तो मैंने तुझे कभी भी कुछ नहीं कहा?”[11]

गुलेरी-“फिर इस बार क्यों कहता है?”

मानक -“इस बार..... इस बार........”

देखा जाए तो सभी अलग अलग भाषाओं में सवाद होता ही है। अमृता प्रीतम की अनुवादित पुस्तकें जो अन्य भाषाओं में प्रकाशित हुईं है उनमें भी हम देख सकते है। उदाहरण- “आपको करनल वाली कोठी के पैसे अभी उतरे है या नहीं?”[12]

“कहां भाई?... वहा तो और ही...मामला बन गया है...”

“क्या हो गया वहां?”

“वह पड़ोस में भी एक कोठी बन रही थी न.....”

“हां।“

“बस भाई उनकी आपस में लग गई।“

“लड़ाई हो गई उनकी?

“फिर?”

“करनल को मन में शक हो गया.... उसने भाई कोठी अपने नाम करवा ली...”

“पहले उसके औरत के नाम थी?”

“ज़मीन का बियाना उसी के नाम पर कर दिया था भाई...”

“फिर?”

“औरत को जब पता चला उसने मुकदमा कर दिया, वह जो एकल था न, उसने _शह दी थी।

- विवरणात्मक शैली

जब पाठक किसी भी रचना में पड़ते समय कोई भी एक दृश्य उसके आंखों के सामने प्रकट होता है। इसी की वजह से उन विवरणों के पीछे के यथार्थ को समाज पता है जैसी ‘बू’ कहानी में उस गांव के त्यौहार का चित्रण दिखाईं देता है।

उदाहरण- “मायके वह एक ही बार अशविन के महीने में जाति थी। वह पर बड़ा मेला लगा रहता था। गांव की सारी लड़कियां गुलेरी की तरह ही मायके से कौन आएगा यह सोचकर वह सज सावरकर बैठती थी।”[13]

- वर्णनात्मक शैली

अमृता प्रीतम की कहानियों में वर्णन किया गया है। जैसे कि स्थान, मानुष्य, लड़की,ना, औरत परिवार आदि का वर्णन किया गया है। सभी कहानियों में हमे किसी ना किसी चीज का वर्णन किया हुआ मिलता है। कहानी छोटी हो या बड़ी वर्णन हर किसी ना किसी का तो होता ही है।

उदाहरण "गहरे सावले रंग में उसके बदन का मांस गुथा हुआ था। मैं अंगूरी की मुंह की ओर देखती रही, अंगूरी की छाती की ओर, अंगूरी की पिंडलियों की ओर वह इतने सख्त मैदे की तरह गुथी हुई थी कि जिससे मठरिया तली जा सकती थी। उसके पैरों में पायल थी जिससे दूर से ही पता चलता था की वह आ रही है।"[14]

"हमारे गांव में आम बहुत होते हैं। लोग उन्हें चूसते भी है, उनका आचर भी डालते हैं, उनका मुरम्बा भी डालते हैं, उनकी चटनी भी बनाते हैं और उनकी फाके सुखाकर मर्तबान भर लेते हैं। मेरी मां ने मुझे भी आम की एक फांक समझ लिया और मेरा नाम अमाकडी रख दिया था।"[15]

अमृता प्रीतम क जो पहले रचना प्रकाशित हुई थी जहां पर उनकी लेखनी में रुचि और अमृत लहर भी बड़ी। तब उनका लिखने का सफर शुरू हुआ और पीछे मुड़कर न देखा। उनके लेख की में भी विभाजन और दर्द भी दिखाई पड़ता है। उसे पर उन्होंने एक कविता लिखी आज आपका बारिश अनु इस कविता के कारण विभाजन

में जो स्थिति वहां दिखाई पड़ रही है यह विभाजन का दर्द था जो उनके उपन्यास पिंजर के आधार से उभर कर आया है। लाखों मासूम लोगों को उसे विभाजन के समय मारते हुए उन्होंने अपनी आंखों से देखा उनकी सारी उनकी भावनाएं उनके एक झलक थी अमृता का प्यार, मोहब्बत, आजादी न्याय एक जूड था बगावत के इर्द-गिर्द घूमता था।

अमृता प्रीतम ने अपनी पन्नो को एक शक्ल दी थी। उनकी आत्मकथा रसीदी टिकट के रूप में। उन्होंने उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, कविता और संस्मरण यदि 100 से अधिक विधाएं लिखी है। अनुवाद कई भाषाओं में हुई है। अमृता पहले भारतीय लेखिका थीं। जिनको राष्टीय अकाथमी पुरस्कार मिला। उनके पुरस्कारों की लिस्ट लंबी है। जितनी चर्चा हो उनकी कविताओं की हुई है उतनी ही चर्चा उनके निजी जीवन की भी हुई है।

निष्कर्ष

इस अध्याय के अंदर जो भाषा है उसका उल्लेख किया गया है। भाषा के अंदर हमें पढ़ते वक्त जो कुछ भी अलग-अलग भाषण दिखाई दे रही थी उनको चित्रित किया गया है।

संदर्भ

1.प्रीतम, अमृता. “साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होने वाली पहली भारतीय महिला द्वारा फेमिनिजम इन इंडिया”   पृ 72

2.मानव, सुफलचंद सु. “पंजाबी की लोकप्रिय कहानियां”, संस्करण : २०१८, प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित, पृ 1

3.श्रीवत्स, सत्यपाल डॉ. आलेख, “दर्द और रूमनियम को नई परिभाषा देने वाली अमृता प्रीतम”, संस्करण : २०१४, पृ 19

4.प्रीतम, अमृता. “मेरी पप्रिया कहानियां”, संस्करण : १९७५, प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्लीपृ 11

5.वही पृ 76

6.वही पृ 56

7.वही पृ 59

8.वही पृ 57

9.वही पृ 84

10.वही पृ 13

11.वही पृ 85

12.वही पृ 84

13.वही पृ 84

14.वही पृ 12

14.वही पृ 45

उपसंहार

अमृता प्रीतम की कहानियों में बाल विवाह और स्त्रीत्व के मुद्दे को गहराई से उठाया गया है। उनकी कहानियां समाज में प्रचलित बाल विवाह की प्रथा को उजागर करती हैं और इसके द्वारा स्त्रियों की स्थिति पर जोर डालती हैं। यह बाल विवाह की प्रथा जिस तरह से बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है, उसे प्रस्तुत किया गया है। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। बाल विवाह की प्रथा से उत्पन्न होने वाली सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उजागर किया गया है। इन कहानियों के माध्यम से समाज को इस बुराई के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया है, जिससे बाल विवाह जैसी अनैतिक और हानिकारक प्रथा का अंत हो सके।

स्त्रियों का शारीरिक शोषण और समाज में उनकी स्थिति के बारे में विचार करना बहुत महत्वपूर्ण है। समाज में स्त्रियों पर होने वाले अन्याय को सहने की बजाय, इसे रोकने के लिए कड़ी से कड़ी कार्रवाई की आवश्यकता है। उन्हें अपने अधिकारों को समझने और स्वतंत्रता का अधिक समर्थन करने की जरूरत है। वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय रूप से आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित की जानी चाहिए, ताकि ऐसे अन्याय को रोका जा सके। इससे समाज में एक न्यायमूलक और समान समाज की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके। अंधविश्वास में दबे हुए लोगों को जागृत करना आवश्यक है।

समाज में बहुत सारे लोग अंधविश्वास में विश्वास रख रहे हैं। इस कहानी से स्पष्ट होता है कि अंधविश्वास और रूढ़िवाद कैसे व्यक्ति के मानसिकता को प्रभावित कर सकते हैं। गांव के लोगों की अज्ञानता और अंधविश्वास ने उन्हें कई गलत निष्कर्षों पर पहुंचाया, जिससे उनकी पहली पत्नी को जीना मुश्किल हो गया। इसके आलावा, रूढ़िवादी सोच ने उनके संबंधों पर भी असर डाला, जिससे उनकी द्वितीय पत्नी के साथ संबंध ख़तरे में पड़ गया। इससे साफ होता है कि समाज में रूढ़िवाद और अंधविश्वास का कोई स्थान नहीं होना चाहिए, और शिक्षा और जागरूकता का प्रमुख साधन इसे दूर करने के लिए हो सकता है।

स्त्री शिक्षा के महत्व को समझाने के लिए इस कहानी में अंगूरी का उदाहरण बहुत महत्वपूर्ण है। उसका शौक पढ़ाई का था, लेकिन समाज में रूढ़िवादों ने उसे पढ़ाई से वंचित कर दिया। यह कहानी हमें यह बताती है कि समाज में रूढ़िवादों को छोड़कर स्त्रियों को शिक्षित करने का महत्व समझाना आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से स्त्रियाँ समाज में अपनी अहम भूमिका निभा सकती हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है जो समाज में असमानता और विवाह संबंधित तनाव को बढ़ाती है। यह समस्या गांवों से लेकर शहरों तक फैली हुई है। दहेज प्रथा के कारण गरीबी और आर्थिक असमानता बढ़ गई है जो समाज के विकास में बाधक है। इस समस्या का समाधान केवल समाज के सभी वर्गों के सहयोग से ही संभव है।

इसे रोकने के लिए सशक्त कानून, शिक्षा, और समाज में जागरूकता की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1.प्रीतम, अमृता. “मेरी प्रिय कहानियां”, तीसरा संस्करण : 1975, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

सहायक ग्रंथ

1.प्रीतम, अमृता. “रसीदी टिकट”, नवीन संस्करण : 1996, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स दिल्ली

2.प्रीतम, अमृता. “अक्षरों के साये”, संस्करण : 1997, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

3.प्रीतम, अमृता. “मेरे साक्षात्कार”, संस्करण : 1994, प्रकाशक : किताब घर दिल्ली

4.प्रीतम, अमृता. “दीवारों के साए में”, संस्करण : 1996, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

5.प्रीतम, अमृता. “यह कहानीयां जो कहानीयां नहीं है”, संस्करण : 1996, प्रकाशक : हिंदी पढ़ी बुक्स दिल्ली

6.प्रीतम, अमृता. “एक थी सारा”, संस्करण : 1996, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स दिल्ली

7.प्रीतम, अमृता. “कैली, कामिनी और अनीता”, संस्करण : 1994, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

8.दीक्षित, नारायण हृदय. “भारतीय संस्कृति की भूमिका”, द्वितीय संस्करण : 2017, प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

9.कारात, बृंदा. “भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति”, संपादक : अनुवादक उषा चौहान, संस्करण : 2008,

10.परमजीत, कौर नूर प्रो. “पंजाबी संस्कृति के प्रतिमान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक : पंजाबी साहित्य सभ्याचार सदन

11.सिंह, रतन. “भारतीय सामाजिक व्यवस्था, साहित्य केंद्र”, संस्करण : 2009, प्रकाशन दिल्ली, संस्करण : 2009

12. कालिया, ममता. “स्त्री विमर्श का यथार्थ”, संस्करण: 2015, प्रकाशक : किताब वाले नई दिल्ली

13.सचिदानंद, सर्विस डॉ. “धर्म की उत्पत्ति अनुवाद एवं संपादन”, संस्करण 2019, प्रकाशक : हिंदी भाषा अकादमी प्रकाशन दिल्ली

14. गुप्ता, नत्थलाल डॉ. “भारत में धर्म सिद्धांत और परंपरा”, संस्करण 1993, प्रकाशक : चेतना प्रकाशन नागपुर

15. डोभास, दीपक डॉ. “उत्तराखंड हिमालय समाज एवं संस्कृति”, संस्करण : 2018 प्रकाशक : हर्षिता प्रकाशन दिल्ली

16. सिंह, आनंद. “भारतीय पेशेवर वर्ग एवं परीक्षा संस्कृति”, संस्करण : 2009, प्रकाशक : अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली

17. गुप्ता, ममता ड. “धर्मागाटा और जातीय संघर्ष”, संस्करण : 2011, प्रकाशक : राज राधारानी प्रकाशन दिल्ली

18. प्रीतम, अमृता. “धरती सागर और सौपियां”, संस्करण : 1996, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स इन दिल्ली

19. प्रीतम, अमृता. “ना राधा ना रुक्मणी”, संस्करण : 1992, प्रकाशन : किताब घर दिल्ली

20. खेतान, प्रभा. “बाजार के बीच बाजार के खिलाफ भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न”, संस्करण : 2004, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन

21. राजकुमार, डॉ. *नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान”, संस्करण : 2003, प्रकाशक : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन

22. केलर, नलिनी डॉ. “सामाजिक विकास और प्रगतिशील महिलाएं”, संस्करण : 2012, प्रकाशक : श्रुति पब्लिकेश

23. तिवारी, कामिनी ड. “प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श”, संस्करण : 2011, प्रकाशक : विद्या प्रकाशन

24. गुप्ता, रमणिका. “श्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने”, संस्करण : 2004, प्रकाशक : शिल्पायन प्रकाशक,

25. जैतल, ममता. शर्मा, प्रकाश श्री. “आधी आबादी का संघर्ष”, पहला संस्करण : 2018, संस्करण : हिंदी पैकेट बुक्स इन दिल्ली

26. राजपूत सिंह, मनोहर. “शिक्षा और इतिहास परिवर्तन की चुनौतियां”, संस्करण : 2008, प्रकाशक : किताब घर

27. प्रीतम, अमृता. “मन मंथन की गाथा”, प्रथम संस्करण : 1993, प्रकाशक : किताब घर दिल्ली

28. प्रीतम, अमृता. “एक मुट्ठी अक्षर”, संस्करण : 1994, प्रकाशन : हिंदी पैकेट बुक्स दिल्ली

29. प्रीतम, अमृता. “कच्चे रेशम सी लड़की”, संस्करण : 1993, प्रकाशन : किताब घर दिल्ली

30. प्रीतम, अमृता. “दीवारों के साए में”, संस्करण : 1996, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

31. प्रीतम अमृता, “यह कहानी जो कहानी नहीं है”, प्रथम संस्करण : 1996, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स दिल्ली

32. मिश्रा, रामजी डॉ. “धर्म और राजनीति”, संस्करण : 2009, प्रकाशक : आचार्य प्रकाशन

33. अरोड़ा, सुधा. “आम औरत जिंदा सवाल”, संस्करण : 2008, प्रकाशक : सामायिक प्रकाशन

34. भाटिया, सुदर्शन. “नई कर्तव्य एवं अधिकार”, संस्करण : 1987, प्रकाशक : पोस्ट बॉक्स प्रकाशन

35.एल किरणबाला, जाजू डॉ. “21 वीं सदी मैं स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक”, संस्करण : 2014, प्रकाशक : इंटरनेशनल पब्लिकेशन प्रकाशक

36. राजे, सुमन. “इतिहास में स्त्री”, संस्करण : 2012, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक

37. संघवी, कमला. “आधुनिक परिवार में स्त्री”, संस्करण : 2011, प्रकाशक : कल्याणी शिक्षा परिषद

38. प्रीतम, अमृता. “पारिस्थितिक संकट और समकालीन रचनाकार”, संस्करण : 2019, प्रकाशक : वाणी प्रकाशक

39. प्रीतम, अमृता. “मैं तुम्हें फिर मिलेगी”, संस्करण : 2005, प्रकाशक : कृति प्रकाशन दिल्ली

40. प्रीतम, अमृता. “चुनी हुई कहानियां चुने हुए निबंध”, संस्करण : 1982, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

41.प्रीतम, अमृता. “और बांसुरी बजती रही”, संस्करण : 1997, प्रकाशक : शिलालेख दिल्ली

42.प्रीतम, अमृता. “हर धागे का रिश्ता”, संस्करण : 1999, प्रकाशक : हिंदी पैकेट बुक्स

43. प्रीतम, अमृता. “स्मरणगाथा”, संस्कार : 1997, प्रकाशक : प्रशासन शिलालेख दिल्ली

44. प्रीतम, अमृता. “सात सौ बीसी क़दम, चुनी हुई कहानियां”, संस्करण : 2008, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ

45. प्रीतम, अमृता. “डॉक्यूमेंट्री”, प्रकाशक : न सी ई आर टी

55. जगदीप, प्रसाद गोयल. “आकाशवाणी: वर्षा ४७, अंक १०, संस्करण : 1982

वेबसाइट

1.https://www.globalcitizen.org/en/content/10-barriers-to-education-around-the-world-

2/2.https://leverageedu.com/blog/hi/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B5/

3.https://www.researchgate.net/publication/308908869_Exploring_Different_Types_of_Superstitious_Beliefs_in_Risk-Taking_Behaviors

4.https://ipublisher.in/I/a/57108

5.https://www.aajtak.in/amp/education/knowledge/story/savitribai

phule-jayanti-first-girls-school-of-india-in-bad-condition-know-more-lbse-1607404-2023-01-03#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17125716094248&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Date: 09/05/2024

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/265

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Akshada Arvind Naik Gaonkar a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 12 Hours & 38 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Manisha Gaude.

9/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIMING	TIME SPENT
1.	10/07/2023	11:11 am to 12:11 pm	1 hour
2.	10/07/2023	3:54 pm to 4:11 pm	17 min
3.	13/07/2023	10:59 am to 12:10 pm	1 hour 11 min
4.	04/01/2024	10.35 am to 12.00 pm	1 hour 25 min
5.	10/01/2024	11.49 am to 12.45 pm	56 min
6.	14/02/2024	2.00 pm to 3.00 pm	1 hour
7.	19/02/2024	1.16 pm to 1.19 pm	3 min
8.	11/03/2024	11.45 am to 3.30 pm	3 hour 45 min
9.	13/03/2024	11.41 am to 1.20 pm	1 hour 39 min
10.	24/04/2024	11.53 am to 1.15 pm	1 hour 22 min
Total hours			**12 Hours 38 Minutes**

Manisha

Signature of the Guide
(Asst. Prof. Manisha Gaude)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Gaonkar
09/05/24

Signature of the Student
Miss Akshada Arvind Naik Gaonkar